अजय कुमार उत्तम

# विषय-सूची




**फार्म नं. ४ नियम ८ देखिये**

१. प्रकाशन स्थान जोधपुर, २. अवधि मासिक, ३.४.५, मुद्रक प्रकाशक, सम्पादक का नाम योगेन्द्र निर्मोही। क्या भारत का नागरिक है? हां। पता-द्वारा मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर। ६. उन व्यक्तियों के नाम-पते जो समाचार पत्र के स्वामी हैं, तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हो— डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली तथा कैलाश चन्द्रश्रीमाली द्वारा **मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर ३४२००१ (राज.)**

मैं योगेन्द्र निर्मोही एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरे अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार दिये गये विवरण सत्य है।

— प्रकाशक योगेन्द्र निर्मोही

वर्ष-६

अंक-३

मार्च - १६८६

आनो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

# मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

मुद्रक प्रकाशक लेखक

एवं

सम्पादक

**योगेन्द्र निर्मोही**

## प्रार्थना

।। ॐ सत्यं च श्रद्धे जन्मनि वृते कार्य कार्यीति प्रवर्द्धे हः ।।

**जो ईश्वर गर्भ से जन्म ले कर नर रूप धारण कर सभी प्रकार के घात-प्रतिघातों को झेलते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि मनुष्य जीवन संघर्षों में ही खिलता है, इन संघर्षों पर विजय प्राप्ति करने की मुझे शक्ति दे ।**



सम्पर्क—

**मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान**

डॉ० श्रीमाली मार्ग

हाईकोर्ट कोलोनी,

जोधपुर–३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : २२२०९

# मेरा अनुभूत प्रयोग

दुर्गा सप्तसती एक महत्वपूर्ण मंत्र सिद्ध तान्त्रिक ग्रंथ है, इसके तत्व गोपनीय रहे हैं, बीच बीच में कुछ विद्वानों ने और तांत्रिकों ने इस रहस्यों पर से पर्दा हटाया है, फिर भी कई ऐसे प्रयोग भी है, जो अभी तक प्रकाश में नहीं आ सके है।

मेरे गुरूदेव साधारण गृहस्थ थे, परन्तु वे उच्च कोटि के तपस्वी और महात्मा थे, गृहस्थ में रहते हुए भी वे गृहस्थ के प्रपंचों से दूर रह कर तंत्र साधनाओं में लीन रहते थे। ऊपर से वे अत्यन्त सरल प्रतीत होते हुए भी उनके पास कुछ विशिष्ट सिद्धियां थी जिनके बल पर उनका नाम पूरे भारत वर्ष में विख्यात था। काशी की "विद्वत परिषद" ने उन्हें स सम्मान बुला कर सम्मानित किया था। महामहोपाध्याय श्री गोपीनाथ जी कविराज ने भी उंन्हें अद्वितीय सिद्धि पुरुष माना था।

ऐसे ही श्रेष्ठ योगी पुरुष मधुसूदन जी के सानिध्य में, मैं कुछ वर्षो तक रहा था, उनके द्वारा ही यह अनुभूत एवं अद्वितीय प्रयोग मुझे प्राप्त हुआ था।

**मैंने यह अनुभव किया है, इस प्रयोग के सम्पन्न करने पर सहज में ही विद्या प्राप्त होने लग जाती है, और वह अच्छी श्रेणी में उत्तीर्ण हो जाता है। किसी भी परीक्षा में या साक्षात्कार में अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है, इसके अलावा भूमि या मकान से संबंधित समस्या, मुकदमें का संकट, शत्रु भय, कन्या या पुत्र के विवाह में रुकावट, किसी भी प्रकार के ग्रह का अनिष्ट धन का अभाव, पति पत्नी में मतभेद, तलाक की समस्या पुत्र का अभाव, घर की अशांति, दरिद्रता रोजगार की न्यूनता, आदि हल हो जाती है और साधक को यह अनुष्ठान पूर्ण होते होते अनुकूल फल प्राप्त होने लग जाता हैं। आर्थिक समस्या और उससे संबंधित कठिनाइयों के हल में तो यह अद्वितीय प्रयोग है।**

## प्रयोग करने के मुहूर्त

**यह प्रयोग किसी भी ग्रहण, होली की रात्रि, पुष्य नक्षत्र, किसी भी महीने की अमावस्या या किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ किया जा सकता है,** सबसे पहले जिस दिन यह साधना प्रारम्भ करे, उस दिन छः सफेद कागज लेकर उन पर निम्न यंत्र अंकित करे। यंत्र अंकन में अष्ट गन्ध या त्रिगंध (कपूर, केसर, कुंकुम) से अंकन करे, पहला यंत्र अपने आसन के नीचे रख दें, दूसरा किसी ताबीज में भर कर (इसके लिए पहले से ही ताबीज बनवा ले) अपने गले में धारण कर ले, तीसरा यंत्र पूजा स्थान में रख दें, चौथा यंत्र यदि फैक्टरी या दुकान हो तो वहां रख दें नहीं हो तो घर में जहां रुपये पैसे रखते हैं, वहां रख दें, पांचवा यंत्र किसी ताबीज में भर कर घर के दरवाजे की चौखट से बांध दें, और छठा यंत्र किसी गरीब दीन दुखी व्यक्ति को दे दे। इसके बाद अष्ट गंध (१-चन्दन, २-अगर, ३-केसर, ४-कुंकुम, ५-रोचन,

| | | | |
|---|---|---|---|
| ५ | ३ | २ | ८ |
| ६ | श्रीं | ४ | ७ |
| ह्रीं | १ | | ७ |

= जो यन्त्र कागज पर लिखना है =

६- शिलारस, ७- जटामासी, और ८- कपूर) अथवा त्रिगंध को मिलाकर अपने ललाट पर तिलक करे। फिर सामने किसी थाली में (यह ध्यान रहे कि यह थाली चांदी या पीतल की हो भूल कर के भी लोहे या स्टील की थाली का प्रयोग न करे) त्रिगंध से स्वस्तिक का चिन्ह बनावे और उस पर **'त्रैलोक्य सम्पदा वर वरद यंत्र'** को उस स्वस्तिक पर स्थापित करे और पहले से ही मंगाये हुए छः पुष्पों को उस पर समर्पित करे।

इसके बाद थाली में रखे हुए इस यंत्र की प्राण प्रतिष्ठा करे। इसके लिए साधक को चाहिये कि वे बांये हाथ को अपने सिर पर रखे, और दाहिने हाथ में पुष्प ले कर इस यंत्र को स्पर्श करे और निम्न प्राण प्रतिष्ठा मंत्र को पढ़े।

ओं आं ह्रीं क्रीं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोऽहं मम प्राणाः इह प्राणाः ओं आं ह्रां क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः सोऽहं सर्वं इन्द्रियाणि इह मम वाङ्-मन-चक्षु-श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-प्राण इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इसके बाद भूत लिपि द्वारा मंत्र का शोधन करे। इसमें निम्न शोधन मंत्र का पांच बार उच्चारण करना होता है।

**ओं अ इ उ ऋ लृ ए ऐं ओ औ य र ल व ड़ क ख ग ध ञ च छ झ ज ञ ट ठ ढ़ ड न त थ घ द म प फ भ ब श ष स (मूल मन्त्र) स ष श ब भ** फ प म द घ थ त न ड ढ ठ ट ण ज झ छ च ञ ग घ ख क ड़ ल व र य ह औ ओ ऐ ए लृ ऋ उ इ अ ओं।

इसके बाद शुद्ध हकीक माला से निम्न मंत्र की पांच माला मंत्र जप होना चाहिए। यदि हकीक माला घर में हो तो पहले से ही प्राप्त कर देनी चाहिए। इस बात का ध्यान रहे कि इस प्रयोग के लिए जो हकीक माला प्रयोग कर रहे है, वह माला पहले अन्य किसी साधना में प्रयोग नहीं की हुई हो।

## मूल मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौं ग्लौं हूं हूं क्लीं क्लीं जूं जूं सः सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

जब पांच माला मंत्र जप पूरा हो जाय तो थाली में जो यंत्र रखा हुआ है, उस थाली की तीन बार प्रदक्षिणा करते हुए इस मंत्र का उच्चारण करे।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर-कृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥

प्रदक्षिणा करने के बाद वापिस आसन पर बैठ जाय इस प्रयोग में साधक को पूर्व या उत्तर दिशा की ओर तथा साधना काल में शुद्ध घृत का दीपक लगाना चाहिए। इसमें आसन किसी भी रंग का हो सकता है, धोती सफेद या पीले रंग की पहिननी चाहिए। प्रदक्षिणा करने के बाद पूर्व जन्म कृत दोष और इस जन्म के दोषों की निवृत्ति के लिए शाप विमोचन हेतु एक माला गणपति मंत्र एक माला गुरु मंत्र और एक माला गायत्री मंत्र की जपनी चाहिए। गायत्री मंत्र का सबको ज्ञान हैं, **गणपति मंत्र – ॐ ग्लौं गणपतये नमः –** तथा **गुरू मंत्र ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरूभ्यो नमः** मंत्र का प्रयोग

किया जा सकता है।

मूल मंत्र तथा शाप विमोचन मंत्र जपते समय साधक किसी से बोले नहीं, यदि जप काल में माला हाथ से गिर जाय तो उस माला को पुनः पूरी जपे और अपने आसन से उठे नहीं।

यह प्रयोग केवल ११ दिन का हैं, यदि इस अवधि में साधक को बाहर जाना पड़े तो यंत्र और माला को अपने साथ लेता जांय और वही पर इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है, यह प्रयोग दिन या रात्रि को कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है।

मैंने अपने जीवन में अपने गुरू महाराज से कई साधनाएं सीखी है, परन्तु इस प्रयोग का अद्भुत प्रभाव और चमत्कार देख कर तो मैं दंग ही रह गया हूं। प्रत्येक साधक को यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

इस प्रयोग के लिए **"त्रैलोक्य सम्पदा वर वरद यंत्र"** की जो आवश्यकता होती है, वह पत्रिका अपने साधकों को सर्वथा मुफ्त में देने का विचार रख रही है। आप नीचे दिया हुआ प्रपत्र भर कर पत्रिका का एक सदस्य बनाते हुए यह यंत्र सर्वथा मुफ्त में प्राप्त कर सकते है। आप जिसको भी पत्रिका सदस्य बनाना चाहते है, उनसे धनराशि प्राप्त कर लें जिससे आपको किसी भी प्रकार की आर्थिक हानि नहीं होगी।

## त्रैलोक्य सम्पदा वर वरद यन्त्र

मैं उपरोक्त साधना सम्पन्न करना चाहता हूं. और यह यंत्र प्राप्त करने का अधिकारो हूं। मैं आपका पत्रिका सदस्य हूं कृपया आप मुझ १०५) रु. की वो. पी. से उपरोक्त यंत्र सुरक्षित रूप से भेज दें। वी. पी. आने पर मैं उसे छुड़ाने का वायदा करता हूं।

पूज्य गुरुदेव

मेरी पत्रिका सदस्यता संख्या ............................

मेरा नाम ............................................

मेरा पूरा पता ........................................

.......................................................

वी. पी. छूटने पर आप मेरे निम्न मित्र परिचित या संबंधी को पत्रिका सदस्य बना दे और उन्हें पूरे वर्ष भर नियमित रूप से पत्रिका भेजते रहे। उपरोक्त पत्रिका सदस्यता रसीद मुझे मेरे पते पर भेज दें।

मेरे मित्र का नाम ......................................

मेरे मित्र का पूरा पता ..................................

आप चाहें तो उपरोक्त प्रपत्र की नकल अलग कागज पर उतार कर और उसे भर कर हमें भेज सकते हैं, जिससे कि आपकी पत्रिका खराब नहीं होगी। ★

देव दुर्लभ

अद्वितीय गोपनीय प्रामाणिक

# साधना-रहस्य

जिनकी प्रतीक्षा आपको वर्षों से थी

सम्पर्क

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कोलोनी,

जोधपुर ३४२००१ (राज)

फोन–२२२०९

प्रिय बन्धु,

अब यह आवश्यक हो गया है कि हम जो भी साधना करे वह पूर्ण प्रामाणिक तरीके से सम्पन्न करें, जिससे कि उसमें निश्चित सफलता प्राप्त हो।

इसके लिए दो ही तरीके है, एक तो परम पूज्य गुरुदेव के पावन चरणों में बैठ कर उन साधना विधियों को प्रेक्टिकल रूप से सीखे, समझे और प्रयोग करे, और दूसरा तरीका यह है कि हम उच्च कोटि की साधनाओं से सम्बन्धित रंगीन वीडियो कैसट बना दे जिसमें पूज्य गुरुदेव उस साधना विधि को पूर्णता के साथ प्रेक्टिकल रूप से सम्पन्न करे. उनके मुंह से ही स्तोत्र एवं मन्त्र उच्चरित हो और उनकी पूरी पूजा पद्धति एवं साधना पद्धति को अपनी आंखों से देखे, समझे सीखे और सफल हो।

पहली बार पूज्य गुरुदेव की विशेष अनुकम्पा से कुछ अद्वितीय कैसट तैयार की है, जिसमें पूज्य गुरुदेव स्वयं साधना करते हुए स्तोत्र उच्चरित करते हुए और सम्बन्धित मन्त्र एवं अनुष्ठान सम्पन्न करते हुए दिखाई देगे, साधना की बारीकियों को उसकी सूक्ष्मताओं को आप प्रत्यक्ष अनुभव कर सकेगे।

अद्वितीय कैसट दुर्लभ साधना विधियों और अचरज भरी सफलतादायक वीडियो कैसट एवं टेप कैसट आप सभी साधकों और शिष्यों के लिए प्रस्तुत है।

ऐसा मौका और ऐसा सौभाग्य तो जीवन में कभी कभी ही आता हैं, मुझे विश्वास है कि प्रत्येक कैसट आपके कई कई पीढियों तक के लिए संग्रहणीय ज्ञानवर्द्धक एवं सफलतादायक होगी।

—सम्पादक

## महाविद्या साधना कैसेट-१

इस तीन घंटे की रंगीन विडियो कैसेट में चार महाविद्याओं के यन्त्र चित्र के साथ पूरी पूजन विधि स्पष्ट की गई है, प्रत्येक महाविद्या पर एक घंटा दिया गया है, इस कैसट में निम्न महाविद्याओं से सम्बन्धित गोपनीय मन्त्र अनुष्ठान विधि, स्तोत्र आदि संग्रहित है।

१- काली महाविद्या- पूर्ण साधना विधि
२- त्रिपुर भैरवी महाविद्या- पूर्ण साधना विधि
३- धूमावती महाविद्या पूर्ण साधना विधि

प्रत्येक महाविद्या अपने आप में अद्वितीय है, काली साधना जहां समस्त प्रकार के रोग, शोक, दुख, दारिद्र मिटाने और शत्रुओं का नाश करने में सहायक है, वहीं त्रिपुर भैरवी जीवन में पूर्णता एवं मनोवांछित सफलता के लिए सिद्ध देवी है, धूमावती प्रयोग के द्वारा वह सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है जो जीवन में आवश्यक है।

उदाहरण के लिए इस कैसेट में काली साधना एवं अनुष्ठान के बारे में पूज्य गुरुदेव के द्वारा निम्न प्रयोग संग्रहित हैं।

(१) काली ध्यानम् (२) काली यन्त्रोद्धार (३) काली मन्त्रोद्धार (४) दक्षिण काली सार्यपद्धति (५) भूत शुद्धि (६) षडंगन्यास (७) स्थितिक्रम (८) षोढान्यास (९) विलोमन्यास (१०) तत्वन्यास (११) बीजन्यास (१२) मानस पूजा (१३) बहि:पूजा (१४) अर्ध्यस्थापन विधि (१५) पात्रस्थापन विधि (१६) तत्व शुद्धि (१७) वटुकादिभ्योबलिप्रदानम् (१८) आधारशक्त्यादिपूजनम् (१९) ध्यानादिपूजा विधि (२०) जप विधि (२१) काली सहस्रनामावली (२२) कुमारी सुवासिन पूजाविधि (२३) बलिदान प्रकार (२४) नित्य होम प्रकार (२५) पुरश्चरण नियम (२६) संक्षिप्त पूजाविधि (२७) कर्पूर स्तोत्रम् (२८) काली स्तोत्रम् (२९) काली कवचम् (३०) काली हृदयम् (३१) काली-उपनिषद् (३२) काली शतनाम स्तोत्रम् (३३) काली ककारादि सहस्रनाम।

इसी प्रकार अन्य सभी महाविद्या साधनाओं के बारे में भी इतना ही विस्तृत विवेचन पूज्य गुरुदेव के द्वारा सम्पन्न होते हुए आप इस कैसेट में देख सकेंगे।

मूल्य-३००)रू०

## महाविद्या साधना कैसट—२

वास्तव में ही यह कैसट अपने आप में अद्वितीय है, हम ही नहीं अपितु पूरा परिवार और मित्र सन्यासी और योगी इन कैसटों को देख कर महाविद्याओं के प्रयोग को अपनी साधनाओं को और पूर्ण सफलता के लिए किये गये उपायों को समझ सकेंगे।

इस रंगीन वीडियो कैसट में निम्न तीन महाविद्याओं से सम्बन्धित विस्तृत साधना विधियां होगी जैसी कि पिछले पृष्ठ में काली महाविद्या के बारे में लिखा जा चुका है।

१– तारा महाविद्या -पूर्ण साधना विधि
२– छिन्नमस्ता महाविद्या -पूर्ण साधना विधि
३- कमला महाविद्या -पूर्ण साधना विधि

तारा महाविद्या साधना को प्रत्यक्ष देखने के लिए तो उच्चकोटि के योगी और साधु सन्यासी भी तरसते है, यह धनप्रदायक देवी है और इसकी साधना पूर्णता के साथ सम्पन्न करने पर अचानक और आकस्मिक रूप से धन प्राप्त होता रहता है।

एक अद्वितीय साधना विधि पूरे एक घण्टे में विस्तृत चिन्तन, अनुष्ठान, मन्त्र, स्तोत्र एवं साधना विधि।

छिन्नमस्ता अपने आप में तन्त्र की अधिष्ठात्री देवी है; जिसकी साधना से किसी भी प्रकार के रोग, दुख, आकस्मिक संकट और शत्रुओं पर पूर्ण नियन्त्रण प्राप्त किया जा सकता है, अपने आप ही यह इतनी श्रेष्ठ साधना है, कि जिसको प्राप्त करने के लिए उच्च स्तर के साधक भी तरसते हैं।

कमला महाविद्या साधना तो सही अर्थों में व्यापार वृद्धि, आर्थिक उन्नति तथा भोग और मोक्ष दोनों को ही देने में सहायक महाविद्या है, इसमें पूज्य गुरुदेव ने पूर्णता के साथ श्रीसूक्त पद्धति एवं कनकधारा विवेचन को भी स्पष्ट किया है।

अपने आपमें अद्भुत एवं अद्वितीय कैसट, जो आपके घर में संग्रह करने लायक हैं।

श्रेष्ठ स्तर के कैसट पर रंगीन यह वीडियो कैसट अपने आप में ही दुर्लभ कैसट कही जा सकती है। मूल्य-३००)रू०



Scanned by CamScanner

## महाविद्या साधना कैसट–३

यह रंगीन वीडियो कैसेट इतनी शानदार और अनुपम है, कि जिसने भी इसको देखा है, वह दांतों तले उंगली दबाकर रह गया है, साधना की जितनी बारीकियां, अनुष्ठान की जितनी गोपनीयता इन कैसेटों मे दीं गई है, वे तो अपने आप में आश्चर्यजनक है, और फिर वह भी पूज्य गुरुदेव के मुंह से निकले हुए, मन्त्र और स्तोत्र इससे ज्यादा और प्रामाणिकता क्या चाहिए ?

इस कैसेट में निम्न तीन महाविद्याओं को और उनकी साधना विधियों को स्पष्ट किया है ।

१- बगला मुखी महाविद्या - पूर्ण साधना विधि

२- भुवनेश्वरी महाविद्या - पूर्ण साधना विधि

३- मातंगी महाविद्या - पूर्ण साधना विधि

उपरोक्त तीनों ही महाविद्या साधना अपने आप में अद्वितीय हैं, जो सही अर्थों में साधक है, जिनको सही प्रकार से साधना करनी है, उनके लिए तो ये कैसेटें सोने का खजाना है ।

हम कल्पना ही नहीं कर सकते थे, कि पूज्य गुरुदेव इस प्रकार की अनुमति दे देंगे, जब वे स्वयं साधक बन इन महाविद्याओं की बारीकियों को, साधना विधियों को, अनुष्ठान प्रयोग को समझाते हुए और करते हुए दिखायेंगे तो फिर बाकी क्या रह जायेगा ?

पहली बार ये भव्य और अद्वितीय कैसेटें तैयार हुई हैं जो अपने आप में निर्दोष है, प्रामाणिक है, और साधनात्मक दृष्टि से पूर्ण है ।

प्रत्येक कैसेट में उस महाविद्या साधना से सम्बन्धित सम्पूर्ण ग्रन्थो को टटोल कर उसका निचोड़ प्रस्तुत कर दिया गया है ।

बगला मुखी साधना जहां पूर्ण रूप से शत्रु संहारक साधना है, वहीं भुवनेश्वरी अतुलनीय धनप्रदायक देवी है, मातंगी महाविद्या साधना तो प्रत्येक साधक के लिए अनिवार्य है, क्योंकि यह सभी दृष्टियों से पूर्ण सफलता दायक है ।

–मूल्य ३००)रू०

## महाविद्या साधना कैसेट–४

हजारों लाखों रूपये खर्च करने और जंगलों में भटकने के बावजूद भी सही गुरू मिल जाय, यह कोई आवश्यक नहीं, और इतना परिश्रम करने के बाद भी गुरू किसी भी साधना की गोपनीयता और विशिष्टता समझा दे यह कोई जरूरी नहीं है।

पर गुरुदेव तो अत्यन्त ही मंगलमय व्यक्तित्व हैं, उन्होंने इन कैसटों के माध्यम से सभी साधकों और शिष्यों को जो कुछ प्रदान किया है, वह अपने आप में अद्वितीय है, इसके लिए तो यह सारा साधक वर्ग उनके प्रति जन्म जन्म तक ऋणी रहेगा।

इस कैसेट में निम्न तीन साधनाएं दी है-

१- षोडशी त्रिपुर सुन्दरी महाविद्या - पूर्ण साधना विधि
२- गणपति साधना विधि
३- भगवती दुर्गा साधना विधि

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी तो दसो महाविद्याओं में सर्व श्रेष्ठ और प्रमुख है इस कैसट में ":लघु षोडशी" और "वृहद षोडशी" दोनों को विस्तार से सम-गया है, यह अपने आप में इतना गोपनीय और गुह्य विषय है कि ऊंचे से ऊंचे साधक या सन्यासी को भी इसका ज्ञान नहीं होता, पर इसमें यह पूरी साधना विधि विस्तार से समझाई गई है।

दुर्गा साधना के अन्तर्गत भगवती दुर्गा से संबन्धित विस्तार से विवेचन और उसका क्रम समझाया गया है, पहली बार इतना विस्तार से भगवती दुर्गा के बारे में अनुष्ठान विधि दी है, कि इस कैसट को सभी लोगों ने सराहा है, देखा जाय तो अन्य सभी कैसटों की अपेक्षा इस कैसट की मांग ज्यादा ही रही है।

और फिर इसमें गणपति साधना के बारे में अत्यन्त विस्तार से विवेचन किया है, गणपति के बारे में जितना साहित्य है, जितनी प्रामाणिक विधियां हैं, उन सब का सारभूत ले कर इस कैंसट का निर्माण किया है,

इतना बड़ा साधनात्मक खजाना एक ही कैसट में संग्रहित हो, और वह आपके घर में हो, इससे बड़ा सौभाग्य हो ही क्या सकता है।

–मूल्य ३००)रु०

# नवरात्रि साधना कैसेट

यह कैसेट अत्यन्त ही परिश्रम से बनाई गई है, पिछले दिनों विभिन्न स्थानों पर शिविर सम्पन्न हुए, जिनमें बडौदा, बलसाड़, बम्बई, बम्बई-यज्ञ, कूल्लू मनाली और जोधपुर - इन सभी में सैकड़ों हजारों साधकों ने भाग लिया साधना सम्पन्न की, गुरू-धुन के समय मस्त हो कर कीर्तन किया और इस प्रकार उन्होंने पूरे साधकों के आनन्द और उल्लास को इन विभिन्न शिविरों में व्यक्त किया।

और इन सब का सार भूत यह कैसेट है जिसमें कहीं न कहीं पर आपका चित्र भी विद्यमान होगा, किस प्रकार से गुरू आरती गाई जाती है, किस प्रकार से संध्या कालीन आरती है, यह अद्भुत मनोहर दृश्य इस कैसेट में विद्यमान है।

और फिर बम्बई के समुद्र के किनारे दी हुई ब्रह्म दीक्षा का सांगों-पाग विवेचन है, और पूज्य गुरुदेव के द्वारा उच्चरित पूर्ण ब्रह्म दीक्षा मन्त्र भी. साथ ही साथ नवरात्रि के अवसर पर चामुण्डा साधना के अन्तर्गत पूज्य गुरुदेव ने जो विस्तार से चामुण्डा मत्र दीक्षा उच्चरित की, वह कालजयी मंत्र भी पूर्णता के साथ इस कैसट मे विद्यमान है।

और इसके साथ ही साथ है, पूज्य गुरुदेव के विभिन्न प्रवचन इस कैसट में गुरू की महत्ता, शिष्य के कर्तव्य और सिद्धाश्रम के बारे में विस्तार से विवेचन किया हुआ है।

एक अत्यन्त ही दुर्लभ और मनोहारी कैसट, एक ऐसी कैसट जिसे आप बार-बार देखना चाहेंगे, एक ऐसी अद्वितीय वीडियो कैसट जो आपके घर की शोभा है या दूसरे शब्दों में कहूं तो इस कैसट के माध्यम से हमेशा हमेशा के लिए पूज्य गुरुदेव आपके घर में विद्यमान हैं

एक संग्रहणीय कैसट —मूल्य ३००)रू०

## टेप रिकार्डर कैसेट

जो साधक वीडियो कैसट नहीं खरीद सकते उनके लिए हमने कुछ महत्व-पूर्ण कैसट बनाई है जिनमें साधना की पूर्ण विधि संबंधित अनुष्ठान, मंत्र और विवेचन दिया गया है, इन कैसटों को आप कार में चलते समय, या घर में बैठे हुए टेप रिकार्डर से बजा कर सुन सकते हैं, मंत्र का उच्चारण बार बार समझ सकते है और इस प्रकार यह कैसट आपकी प्रत्येक साधना के लिए महत्वपूर्ण होगी

### १- काली - धूमावती कैसट

इसमें उपरोक्त दोनों महाविद्याओं से सम्बन्धित पूर्ण प्रयोग, ध्यान यन्त्रोद्धार, मन्त्रोद्धार प्रयोग, पूजा प्रयोग, स्तोत्र, कवच, हृदय शतनाम आदि विस्तार से दिया गया है। ६०)रू०

### २- बगलामुखी-कमला साधना कैसट

इस डेढ़ घटे की कैसट में उपरोक्त दोनों महाविद्याओं से संबंधित विस्तार से मंत्र प्रयोग और साधना प्रयोग पूज्य गुरुदेव के द्वारा स्पष्ट हुआ है, अपने आप में दुर्लभ और अद्वितीय कैसट है। -मूल्य ६०)रू०

### ३- तारा-मातंगी साधना कैसट

इसमें उपरोक्त दोनों महाविद्याओं से संबंधित जितना महत्वपूर्ण प्रयोग दिया है, वह अपने आप ही देव दुर्लभ है, इसमें तन्त्रोक्त और मन्त्रोक्त दोनों ही रूपों में साधना प्रयोग स्पष्ट किये है, आपके लिए एक महत्वपूर्ण कैसट ६०)रू.

### ४- भुवनेश्वरी-छिन्नमस्ता साधना कैसट

उपरोक्त दोनों महाविद्याओं के बारे में अत्यन्त ही सूक्ष्म विवेचन इस कैसट में किया गया है, केवल इस कैसट के माध्यम से ही साधक साधना की बारीकियां समझ सकता है और साधना में सफलता प्राप्त कर सकता है। मूल्य ६०)रू०

### ५- षोडशी त्रिपुर सुन्दरी-त्रिपुर भैरवी साधना कैसट

इस कैसट में उपरोक्त दोनों महाविद्याओं के बारे में और उनसे संबंधित अनुष्ठान के बारे में अत्यन्त ही विस्तार से विवेचन किया गया है, आपके लिए अत्यन्त हीं महत्वपूर्ण कैसट है। -मूल्य ६०)रू०

धन राशी मनियार्डर से या बैंक ड्राफ्ट भेजें।

सम्पर्क

**मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान**

डा० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी, पोस्ट-जोधपुर (राज०)

संसार की

अद्वितीय आश्चर्यजनक अप्रतिम साधना

## जो वर्ष में एक बार अक्षय तृतिया को ही सम्पन्न होती है

# अक्षय पात्र साधना

मुझे पिछले दिनों नेपाल का सर्वाधिक प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थालय "राणा ग्रन्थालय" देखने का अवसर

मिला, सही अर्थों में देखा जाय तो यह संसार का सबसे पुराना ग्रन्थालय है। नेपाल के महाराजाओं, राजाओं

और राणाओं को संसार के दुर्लभ और प्रामाणिक ग्रन्थों को संग्रह करने का शोक रहा है यहां पर हजारों हस्त-लिखित पाण्डुलिपियां और दुर्लभ ग्रन्थ सुरक्षित है, संसार की एक मात्र प्रति **"रावण-संहिता"** केवल यही पर सुरक्षित है, इसी प्रकार **मेघनाथ संहिता नागार्जुन कल्पद्रुम और वेदव्यास उपनिषद** जैसे ग्रन्थ यही पर सुरक्षित हैं।

यह पुस्तकालय सुरक्षित तो है ही, मगर साथ ही साथ यहां पर उत्तम कोटि की देख-रेख और व्यवस्था भी है। सामान्य व्यक्ति को यहां अन्दर नहीं आने दिया जाता। महाराजा की आज्ञा से ही इस ग्रन्थालय में प्रवेश संभव है, इसकी सुरक्षा व्यवस्था भी आश्चर्यजनक है।

नेपाल के वयोवृद्ध ज्योतिषी और महाराजा के सलाहकार विद्वान मेघ बहादुर थापा का मैं अतिथि था, उसके घर पर ही मुझे दो दिन रहने का अवसर मिला और वही पर चर्चा के दौरान इस ग्रन्थालय को देखने की चर्चा चली।

मैं कई वर्षों से इस पुस्तकालय को टटोलना चाहता, था, परन्तु कोई तरीका बैठ ही नहीं रहा था। मुझे यह ज्ञात था कि इस ग्रन्थालय में कई प्राचीन उपनिषद सुर-क्षित है, जिनको देखने से ही तीर्थ यात्रा जैसा फल मिलता हैं। थापाजी के विशेष प्रयत्नों से मुझे दूसरे दिन इस ग्रन्थालय में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

वास्तव में ही इस ग्रन्थालय में उत्तम कोटि के तांत्रिक ग्रन्थ उपलब्ध हैं और संसार की दुर्लभ तांत्रिक वस्तुएं भी यहां पर सुरक्षित है। यही पर मुझे **"परशु-राम कल्प"** जैसा आश्चर्यजनक ग्रन्थ देखने का अवसर मिला, मैं पिछले चालीस वर्षों से इस ग्रन्थ को देखने या प्राप्त करने की आशा संजोये हुए था, कई दूसरे ग्रन्थों में "परशुराम कल्प" के बारे में अत्यन्त श्रद्धा के साथ बताया गया है कि लक्ष्मी प्राप्ति से संबंधित और तंत्र से संबंधित कई दुर्लभ प्रयोग इस परशुराम कल्प में है।

**संसार भर में परशुराम कल्प के बारे में जो जिज्ञासा** है, उसका कारण इसमें अक्षय पात्र साधना के बारे में **विस्तार से और प्रामाणिक रूप से वर्णन विवरण** हैं। मैं स्वयं इस साधना को समझना चाहता था और संसार के सामने पूर्णता के साथ रखना चाहता था। मेरा यह कार्य ही मेरे पूरे जीवन का आधार था, यदि मैं अपने जीवन में इस ग्रन्थ को खोजकर यदि उसका प्रामाणिक प्रकाशन कर सकूं तो यह जीवन का एक अप्रतिम कार्य होगा, ऐसा मैं अपने मन में विचार लिये हुए था।

और श्री थापा जी की सुहृदयता से और उनके विशेष प्रभाव के फलस्वरूप मुझे इस ग्रन्थालय में परशु-राम कल्प ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रति देखने का अवसर मिला, जो कि भोज पत्रों पर प्रामाणिकता के साथ अंकित अपने आप में दुर्लभ और अद्वितीय प्रति है। जिसमें ग्रन्थ कई तन्त्रों का समावेश तो है ही; पर इसमें अक्षय पात्र साधना का भी महत्वपूर्ण वर्णन है।

कहते है, कि इस साधना को परशुराम के अलावा कई ऋषियों ने सम्पन्न की थी, स्वयं परशुराम ने सूक्ष्म शरीर से उपस्थित हो कर भगवान श्री कृष्ण को यह साधना सम्पन्न कराई थी। **भगवत्पाद शंकराचार्य ने स्वयं एक स्थान पर स्वीकार किया है, कि परशुराम कल्प अपने आप में अद्वितीय ग्रन्थ है, और इसकी अक्षय पात्र साधना तो सम्पूर्ण जीवन की जगमगाहट है जो भौतिकता में पूर्णता चाहते हैं, जो आश्चर्यजनक रूप से लक्ष्मी की कृपा चाहते हैं, जो अपने जीवन में धन-धान्य ऐश्वर्य और अथाह सम्पत्ति चाहते हैं, उनके लिए एक मात्र परशुराम कल्प ही सर्वोच्च साधना है जो अपने जीवन में करोड़पति बनना चाहते हैं, जो भौतिकता की दृष्टि से पूर्णता और पराकाष्ठा चाहते हैं, जो अपने व्या-पार को सम्पूर्ण भारतवर्ष में और संसार में फैलाना चाहते है, उन्हें परशुराम कल्प का आधार लेना ही चाहिए।**

**इस ग्रन्थ में आगे बताया गया है कि जो अपने जीवन में पूर्ण स्वस्थ निरोग, सौन्दर्ययुक्त और पराक्रमी**

बनना चाहते है, जो अपने जीवन में अथाह स्वर्ण भण्डार और धन सम्पत्ति की इच्छा रखते है, जो पूर्ण भोग और ऐश्वर्य में जीवन व्यतीत करना चाहते है, उन्हें परशुराम कल्प का ही सहारा लेना चाहिए क्योंकि परशुराम कल्प में ही अक्षय पात्र साधना दी हुई है और इस अक्षय पात्र साधना के द्वारा ही जीवन की पूर्णता, भौतिकता संपन्नता, श्रेष्ठता, और सर्वोच्चता प्राप्त की जा सकती है।

## अक्षय पात्र साधना

यद्यपि मैं इस ग्रन्थ से सम्पूर्ण तंत्र साहित्य को तो नहीं लिख सका, परन्तु इतना समय मुझे अवश्य मिल गया कि मैं इस पुस्तक में दी हुई अक्षय पात्र साधना को पूर्णता के साथ अंकित कर सकूं और वास्तव में ही यह मेरे जीवन का सौभाग्य है कि मुझे इस साधना की प्रतिलिपि प्राप्त करने का अवसर मिल सका।

यह साधना वर्ष में केवल एक बार अक्षय तृतिया को ही सम्पन्न की जा सकती है। इस वर्ष परशुराम जयन्ती ७-५-८९ को और अक्षय तृतिया ८-५-८९ को है। यह तीन दिन की साधना है और ९-५-८९ तक सम्पन्न की जाती है।

## अक्षय पात्र साधना सामग्री

इस साधना के लिए साधक को सर्वथा नयी पीली धोती धारण करनी चाहिए और पीली धोती कन्धों पर ओढनी चाहिए। इस ग्रन्थ में बताया गया है कि पहले प्रयोग की हुई धोती का उपयोग नहीं किया जाता।

इसके अलावा त्रिगंध (कुंकुम, केसर, कपूर) चावल, नारियल, पुष्प माला, फल, दूध, दही, घी, शहद, शक्कर, दूध का बना हुआ प्रसाद इलायची जल पात्र, पीपल के पत्ते आदि।

इसके अलावा साधक को इस साधना की दो महत्वपूर्ण वस्तुएं "अक्षय पात्र" और "अक्षय फल" भी पहले से ही प्राप्त कर साधना सामग्री के साथ रख देने चाहिए।

## प्रयोग

७-५-८९ की रात्रि को (जिस दिन परशुराम जयंती है) साधक पीली धोती पहिन कर कंधों पर पीली धोती डाल कर पीले आसन पर उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने पानी का लोटा भर कर के रख दें, और फिर लोटे पर त्रिगंध से पांच बिन्दियां लगावे और धोती या कलावा से लौटे का पूजन करें। फिर इस कलश के ऊपर लाल वस्त्र में लपेट कर नारियल रख दे, यह नारियल जटायुक्त होना चाहिए।

इसके बाद इस कलश के जल में निम्न पचास देव वनौषधियों का आव्हान करे। देवकानन में उगी हुई वनोषधियों के नाम निम्न है-

१- रक्त-चन्दन, २- अगरु, ३- कपूर, ४- वीरण मूल, ५- कूट, ६- बाला, ७- कुंकुम, ८- कांकोली, ९- जटामांसी, १०- मुरामांसी, ११- चोर पुष्पी, १२- गठिआनी, १३- हल्दी, १४- तेजपात, १५- पीपल, १६- वेल, १७- जयन्ती, १८- पृनि-पर्णी, १९- कामरांगा, २०- गाम्भारी, २१- ताम्बूली, २२- छीलंग, २३- कशेरू, २४- बला, २५- हिजल, २६- तिल पुष्प, २७- अपामार्ग, २८- बरगद, २९- गम्भारि, ३० कण्टकारी, ३१- कुश, ३२- काश, ३३- पिप्पली, ३४- इद्र जौ, ३५- कुटकी, ३६- कुकुवल्वा, ३७- वृहती, ३८- पारला ३९- तुलसी, ४०- अपामार्ग, ४१- इन्दरुता, ४२- भांगरा ४३- अपराजिता, ४४- ताजमूली, ४५- लाजवन्ती, ४६- दूब, ४७- धान, ४८- शतमूला, ४९- रूद्रजटा, ५०- भद्र-पर्पटी

इन वनौषधियों को आह्वान करने का तरीका यह है कि साधक कलश के जल पर दृष्टि रखता हुआ, प्रत्येक वनौषधि का नाम उच्चारण कर उसके आगे "आवाहयामि" शब्द लगावे। उदाहरण के लिए रक्त चन्दन आवाहयामि, अगरू आवाहयामी, इस प्रकार सभी वनौषधियों का आह्वान करें।

इसके बाद उस कलश के जल से तीन बार हाथ में जल लेकर स्वयं पीये और थोड़ा सा जल अपने शरीर पर छिड़के।

इसके बाद अपने सामने तांबे का कोई पात्र रख कर उसमें पुरुष की आकृति त्रिगंध से बनावे, यह पुरूष आकृति परशुराम का आह्वान हैं। यह आकृति त्रिगंध से तिनके की सहायता से या चांदी की सलाका से बना सकते हैं। तांबे की थाली नहीं हो तो पीतल की या चादी का प्रयोग किया जा सकता है, पर लोहे या स्टील की थाली का प्रयोग नहीं होना चाहिए।

फिर इसके बाद उस पुरूष आकृति के पास में ही अक्षय पात्र और अक्षय फल स्थापित कर दे, ये दोनों ही महत्वपूर्ण पदार्थ है, जो मंत्र सिद्ध और परशुराम प्राण कल्प से सिद्ध होने चाहिए, इसके बाद इस अक्षय पात्र में चावल भर दें।

साधक को चाहिए कि वह पहले से ही चावल मंगा कर उसे साफ कर तैयार रखे अक्षय पात्र में साबत चावल ही भरने चाहिए। टूटा हुआ चावल नहीं डालना चाहिए। इसके लिए साधक दिन को ही टूटे हुए चावल निकाल कर अच्छे चावल कटोरी में भर कर पूजा स्थान में रख दे।

इसके बाद साधक हाथ में जल लेकर संकल्प ले, कि मैं अमुक गौत्र अमुक नाम का साधक अक्षय पात्र साधना सम्पन्न करना चाहता हूँ, जिससे कि मेरे जीवन में अद्वितीय और अथाह धन, दौलत, ऐश्वर्य, सम्पन्नता बनी रह सके।

इसके बाद अक्षय पात्र का जल से तथा दूध, दही, घी, शहद, शक्कर को परस्पर मिला कर पंचामृत बना कर उससे अक्षय पात्र को बाहर से धोना चाहिए, इसके बाद पुनः स्वच्छ जल से धोकर पौछ कर अपने स्थान पर रखना चाहिए, और उस पर त्रिगंध बिन्दी लगानी चाहिए, इसी प्रकार अक्षय फल पर भी त्रिगंध की बिंदी लगानी चाहिए और जो पुरूष की आकृति बनाई गयी हैं, उस पर अंगूठे से त्रिगंध के द्वारा तिलक करना चाहिए।

इसके बाद अक्षय पात्र पर पुष्प चढाने चाहिए, सामने दूध का बना हुआ प्रसाद रखना चाहिए और शुद्ध घृत का दीपक लगा लेना चाहिए। इस दीपक में यदि संभव हो तो एक दो बून्द गुलाब का इत्र भी डाल देना चाहिए।

इसके बाद अक्षय पात्र जो कि चावलों से भरा हुआ है, उसके ऊपर चांदी का रुपया (यदि चांदी का रुपया न हो तो वर्तमान में प्रचलित रोकड़ा रुपया) रखना चाहिए और अक्षय पात्र पर पुष्प तथा पुष्प माला चढ़ानी चाहिए।

इस प्रयोग में आगे बताया गया है, कि इस प्रकार का पूजन कर फिर साधक त्रिगंध से अपने ललाट पर तिलक लगावे, यज्ञोपवीत धारण करे, और फिर हरित हकीक माला से २१ माला मंत्र जाप करे। इस बात का ध्यान रखें, कि इस माला का प्रयोग पहले अन्य किसी साधना में नहीं किया हुआ हो, यह हरे रंग की हकीक माला होनी चाहिए।

साधक हकीक माला का जल से और त्रिगंध से पूजन कर, वही पर बैठे बैठे २१ माला अक्षय मंत्र जप करें। यह मंत्र अत्यन्त ही तेजस्वी और प्रभावयुक्त है।

### अक्षय पात्र मन्त्र

**ॐ अक्षैय पात्र धन धान्य समृद्धि देहि देहि अक्षय अप्सरायै नमः।**

इसके बाद साधक साधना स्थल से उठ कर भोजन आदि कर ले, इसी प्रकार दूसरे दिन भी मंत्र जाप करे, पर दूसरे दिन परशुराम आकृति का निर्माण या अक्षय पात्र स्थापित आदि करने की जरूरत नहीं है क्योंकि जो पहले दिन अक्षय पात्र स्थापन आदि कर दिया हैं, वह उसी स्थान पर ज्यों का त्यों रहेगा। इसमें तीन

दिन लगातार दीपक लगा रहना चाहिए, इसे अखण्ड दीप कहते है।

तीसरे दिन अर्थात् ९-५-८९ की रात्रि को भी इसी प्रकार २१ माला मंत्र जप करने के बाद भगवान परशुराम को भक्ति भाव से प्रणाम करे और किसी पीले वस्त्र में उस रूपये, सोने के टुकड़े और चावलों से भरे हुए अक्षय पात्र के साथ साथ अक्षय फल रख कर उसे कपड़े में लपेट कर गांठ बांध ले और इस दुर्लभ अक्षय पात्र को किसी सन्दूक में रख दे इसके साथ ही अक्षय माला को भी रख दे।

दूसरे दिन यदि संभव हों तो ब्राह्मण को घर पर बुला कर भोजन करावे या उसे यथोचित दान आदि दे कर इस साधना को सम्पन्न समझे।

परशुराम कल्प के अनुसार इस प्रकार घर में स्थापित किया हुआ अक्षय पात्र जीवन का सौभाग्य हैं, और यह कई पीढ़ियों के लिए आश्चर्यजनक रूप से धन, ऐश्वर्य एवं भोग देने में समर्थ एवं सहायक है।

वास्तव में ही अक्षय पात्र साधना जीवन का सौभाग्य है, साधकों को चाहिए कि इस दुर्लभ और अद्वितीय अवसर पर इस साधना को अवश्य ही सम्पन्न करे। पत्रिका पाठकों के हित एवं कल्याण के लिए ही मैंने इस गोपनीय और दुर्लभ अक्षय पात्र साधना को प्रस्तुत किया है और मुझे विश्वास है कि साधक इससे अवश्य ही लाभान्वित होंगे।

परशुराम कल्प के अनुसार यदि साधक स्वयं इस साधना को या मंत्र प्रयोग को सम्पन्न नहीं कर सके, तो किसी योग्य ब्राह्मण को बुलाकर के भी यह प्रयोग पूजा और मंत्र जप सम्पन्न करवा सकता है। ●

## परामनोवैज्ञानिक ऊर्जा कैसे प्राप्त की जाती है

शरीर को संचालित करने के लिए दो क्रियाएं आवश्यक है, एक तो श्वांस लेना और और दूसरा श्वांस छोड़ना, इन दोनों ही क्रियाओं के उचित ताल मेल को "प्राणायाम" कहते हैं।

इस प्राणायाम के माध्यम से प्राण अर्थात् मन को बांधा जाता है, उसे आयाम दिया जाता है, और फिर संसार के सबसे तीव्रतम मन्त्र जिसे तिब्बती भाषा में गायत्री मन्त्र कहा जाता है, उस मन्त्र– " सोऽहं " को निरन्तर जप कर उक्त शक्ति प्राप्त की जाती है।

" सो " के द्वारा श्वांस अन्दर लिया जाता है, और " हं " के द्वारा श्वांस को निक्षेप किया जाता है, और इस प्रकार से एक पूरा विद्युत प्रवाह बनाया जाता है, और यह विद्युत प्रवाह तीव्र दाहक एवं उच्चतम शक्ति संचीभूत करता है।

और इसी शक्ति को संचिभूत कर तीसरे नेत्र के द्वारा हजारों मील दूर उड़ते हुए या चलते हुए प्रक्षेपास्त्र को अथवा रॉकेट को समाप्त किया जा सकता है, उस साधक में श्राप देने की अथवा वरदान देने को अद्भुत क्षमता आ जाती है।

मानसिक तनाव से
मुक्ति का
अमोघ मन्त्र

★

**ॐ परम तत्वाय**
**नारायणाय**
**गुरुभ्यो नमः ॥**

# श्री हनुमान प्रत्यक्ष दर्शन सिद्धि साधना

२०-४-८६ को श्री हनुमान जयन्ती हैं, और यह दिन साधकों के लिए साधना के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

जो साधक महावीर को प्रत्यक्ष सिद्ध करना चाहते हैं, जो उनके साक्षात दर्शन करना चाहते है, जो हनुमान साधना के माध्यम से जीवन में पूर्ण सुख, सौभाग्य एव सफलता पाना चाहते है, उनके लिए यह दिन वरदान स्वरूप है।

आगे की पंक्तियों में एक अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ प्रयोग दिया जा रहा है।

मसूरी में लाल टीबा अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है, यहां पर एक अत्यन्त उच्चकोटि के सन्यासी स्वामी रामशरणदास जी कई वर्षो तक रहे। सन् १९८३ में उनका शरीर शांत हुआ, तब उनकी उम्र ८९ वर्ष की थी परंतु जीवन के अंतिम दिनों में भी उनमें अतुलनीय बल, साहस और पराक्रम था, नित्य बीस पच्चीस मील पैदल जाकर आ जाना उनके लिए सामान्य बात थी, मसूरी के पूरे लोग उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा और सम्मान रखते थे, उनका चेहरा अत्यन्त तेजस्वी और दैदीप्यमान रहता था। इस उम्र में भी वे साक्षात हनुमान के ही स्वरूप नजर आते थे।

मुझे उनके साथ तीन वर्ष रहने का अवसर मिला, वास्तव में ही उन में बल, साहस और पराक्रम आश्चर्यजनक था, जीवन के ७० वर्ष की अवस्था में भी वे तीन चार मन वजन के पत्थर को दोनों हाथों से उठाकर फैंक देते थे। क्रोध आने पर वे लम्बे पूरे पेड़ को तने से पकड़ कर जोरों से हिला कर जड़ सहित उखाड़ कर फेंक देते थे।

उनके इस बल और साहस को देखकर लोग तो आश्चर्यचकित थे ही. शिष्य भी उनकी दृष्टि से दृष्टि नहीं मिला पाते थे. उनकी आंखों में एक चमक और तेज था, और वे क्रोध में जहां अग्नि स्वरूप बन जाते थे, वहीं शांत होने पर अत्यन्त ही दयावान, सहायक और परोपकारी दिखाई देते थे।

उनको भगवान महावीर का इष्ट था, और उनके दिन का अधिकांश भाग हनुमान साधना में व्यतीत होता था। तिल से भी छोटे आकार की हनुमान की मूर्ति जो कि मूंगा, रत्न पर खुदी हुई थी, अपनी दाहिनी आंख में रखते थे, और साधना काल में उस अत्यन्त सूक्ष्म मूर्ति को आंख से निकाल कर दाहिनी

हथेली पर रख कर उनकी पूजा अर्चना, साधना सम्पन्न करते थे। वास्तव में हो हनुमान साधना में वे अपने आप में अद्वितीय आचार्य और सिद्ध योगी थे।

उन्होंने एक बार बताया था कि जो अपने जीवन में हनुमान साधना सम्पन्न कर लेता हैं, उसे अन्य किसी भी प्रकार की साधना करने की जरूरत नहीं होती, क्योंकि इस एक साधना से ही अष्ट सिद्धियां प्राप्त होती है. उनके अनुसार इस साधना को सम्पन्न करने से व्यक्ति में अतुलनीय बल, साहस और पराक्रम आ जाता है, उसके शरीर के समस्त रोग समाप्त हो जाते है और उसे वृद्धावस्था व्याप्त नहीं होती। मानसिक रूप से वह अत्यन्त प्रबल, तेजस्वी और पराक्रमी होता है। ऐसे साधक की आखों में एक विशेष प्रकार की लपक पैदा हो जाती है जो सामने वाले व्यक्ति को हतप्रभ और निस्तेज बना देती है, भगवान महावीर हर क्षण ऐसे व्यक्ति के साथ रहते है और आने वाली प्रत्येक बाधा, अड़चन और समस्या को समाप्त कर देते है। शब्दों पर तो वह साधक हावी रहता है, और जीवन में उसे किसी प्रकार की कोई कमी नही रहती।

लगभग एक साल बाद मेरे अनुरोध पर उन्होंने मुझे अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ श्री महावीर साधना का रहस्य समझाया था और बताया था कि संसार में अन्य साधनाएं तो फिर भी इधर उधर से प्राप्त हो सकती है, परन्तु यह साधना तो अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ है। इस एक साधना से ही जीवन के समस्त मनोरथ पूर्ण हो जाते है।

उन्होंने इस साधना के रहस्य को समझाते हुए कहा था कि यह साधना चैत्र शुक्ल चतुर्दशी अर्थात् हनुमान जयन्ती के अवसर पर हो सम्पन्न की जाती है, और वर्ष में केवल एक ही दिन साधक को प्राप्त होता है जब वह इस आश्चर्यजनक साधना को सम्पन्न कर सकता है। इस वर्ष हनुमान जयन्ती २०-४-८९ को आ रही हैं।

श्री रामशरणदास जी ने इस साधना के मर्म को समझाते हुए कहा था कि इसे कोई भी साधक सम्पन्न कर सकता है ऐसा कोई भेद नहीं है कि इसे स्त्री या बालिका नहीं कर सकती। इस साधना को पुरूष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है गृहस्थ, योगी, यति सन्यासी पुरूष या स्त्री इस साधना को सम्पन्न कर जीवन की आश्चर्यजनक उपलब्धियों को प्राप्त कर सकता है। यह केवल एक दिन की साधना है।

## साधना रहस्य

इस साधना की सिद्धि प्राप्त करने के लिए तेल का दीपक. शहद, दही गाय का दूध, गुड़, तिल, मूंग, राई, आदि सामग्री की आवश्यकता होती है।

इस दिन रात्रि को लगभग ९ बजे के आसपास साधक को चाहिए कि वह स्नान कर लाल धोती धारण कर ले, यदि धोती के नीचे अन्तरंग वस्त्र धारण करना चाहे तो वह भी लाल रंग का ही होना चाहिए, सामने एक हाथ लम्बा और एक हाथ चौड़ा लाल वस्त्र किसी लकड़ी के बाजोट या तख्ते पर बिछा दे और साधक स्वयं दक्षिण की ओर मुंह कर बैठे।

लाल वस्त्र के बीचो बीच चने के दाल की ढेरी बनावे और उस पर तांबे का छोटा सा पात्र रख दे। इस पात्र के मध्य में सिन्दूर से (सिन्दूर बाजार में मिलता है और इसे तेल में मिलाकर स्याही की तरह लेप बना कर प्रयोग में लेना चाहिए) बिन्दो लगावे और उस पर "तांत्रिक नारियल" स्थापित कर दे। यह नारियल लघु आकार का मगर आश्चर्यजनक सिद्धिदायक है। सौभाग्यशाली व्यक्ति के घर में ही इस प्रकार का तांत्रिक नारियल होता है। इस नारियल को स्थापित कर उसके ऊपर सिन्दूर की पांच बिन्दियां लगावे और फिर इस तांबे के पात्र के सामने ही दूसरा पात्र रखें और इस तांबे के पात्र में पंच महावीर बीज सिन्दूर से अंकित करे। पंच महावीर बीज में हनुमान के पांचों बीजों का अंकन किया जाता है। ये पांच बीज हैं-

## ह्रौं हस्फ्रौं ख्फ्रां हस्हस्फ्रौं ह्रौं

इसके बाद यदि साधक चाहे तो, पहले से ही मूंगा रत्न पर अंकित हनुमान चित्र को प्राप्त कर ले, या मूंगा रत्न खरीद कर किसी मंगलवार के दिन उस पर हनुमान की मूर्ति का अंकन करवा ले। इस हनुमान विग्रह को पंच मुखी हनुमान विग्रह कहा जाता है और इसे इस पात्र में जो पांच बीज सिन्दूर से लिखे हुए हैं वहां पर स्थापित कर दें और फिर इसके सामने गुड़ और घी का भोग लगावे।

साधक को चाहिए कि वह पहले से ही १०८ लाल पुष्प मंगवा कर रखें, और फिर जो तांत्रिक नारियल स्थापित हुआ है, उस पर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए १०८ पुष्प चढ़ावे। एक मन्त्र बोल कर एक पुष्प चढ़ाये, इसके बाद निम्न लिखित मंत्र का १०८ बार उच्चारण कर १०८ पुष्पों को समर्पित करे।

इसके बाद साधक स्वयं वहीं पर बैठे बैठे सुई के द्वारा लाल धागे में उन १०८ पुष्पों को पिरो कर गले में धारण कर ले।

**मूल मंत्र**

## ॐ हुं हुं हसौं हस्फ्रौं हुं हुं हनुमते नमः

इसके बाद साधक ने जो तांत्रिक नारियल स्थापित किया है, उस तांबे के पात्र के चारों ओर आटे के पांच छोटे-छोटे दीपक बना कर उसमें रुई की बाती तेल में भिगो कर रखे और उन्हें जला दें। जब तेल खतम हो तो उसमें थोड़ा थोड़ा कर के डालता रहे, और उपरोक्त मूल मंत्र का जप मूंगे की माला से सम्पन्न करे। यह मूंगे की माला साधक को पहले से ही लाकर रखनी चाहिए। इस बात का ध्यान रहे कि इससे पहले इस मूंगे की माला का अन्य किसी साधना में प्रयोग नहीं किया हुआ हो।

साधक को लाल आसन बिछा कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर तांत्रिक नारियल पर दृष्टि रखते हुए, मूंगा माला से ११ माला मंत्र जप करना चाहिए।

जब ११ माला पूरी हो जाय तब साधक उन पांच आटे से बने हुए दीपकों की पूजा करें, ये सभी महावीर के प्रतीक है, और देव असुर, सिद्धों से पूजित है। इनकी पूजा जल से और सिन्दूर से करे। इसके बाद तांत्रिक नारियल के पास ही तांबे के पात्र में उपरोक्त पंच महावीर बीज सीधे लिखे और उसी के नीचे सिन्दूर से उलटे भी लिखे, इसका तात्पर्य यह है कि पांचो अक्षर एक बार सीधे लिखे जायेंगे, और उसी के ठीक नीचे ये पांचों अक्षर बिलकुल उल्टे लिखे जायेंगे ऐसा लिखना जरुरी है. यह लेखन सिन्दूर से होना चाहिए।

इसके बाद वहीं पर बैठे बैठे तांबे के छोटे से पात्र में (ऐसे ताम्रकुण्ड बाजार में मिलते है, यदि नहीं हो तो किसी तांबे के पात्र में छोटी छोटी लकड़ियों को जलाकर आहुतियां दी जा सकती है) अग्नि स्थापित कर घी, गुड़ तेल, मूंग चने की दाल तिल और राई को परस्पर मिला कर उनकी आहुतियां दी जानी चाहिए, इसमें केवल २१ आहुतियां उपरोक्त मूल मंत्र का उच्चारण करते हुए दी जाती है। इक्कीसवी आहुति देते समय उस यज्ञ ज्वाला में पूरा ध्यान रखें, क्योंकि इस आहुती को देते समय यज्ञ ज्वाला में ही महावीर के साक्षात दर्शन हो जाते है।

इस प्रकार आहुतियां देने के बाद साधक उस रात्रि को भूमि शयन करे, सुबह उठ कर उस तांत्रिक नारियल को गोपनीय स्थान पर घर में ही रख दें, और यदि मूंगा रत्न पर हनुमान विग्रह अंकित किया हुआ हो, तो उसे अंगूठी मे जड़वा कर हाथ की अंगुली में धारण करले या लाकिट में जड़वा कर गले में पहन ले, जो भोग लगाया हुआ है उसे छोटे छोटे बालकों में बांट दे।

दूसरे दिन प्रातः काल पांच बालकों को भोजन कराने का विधान है या तो उन्हें घर में बुला कर भोजन करा दें या किसी स्कूल में लड्डू बांट दे अथवा अनाथालय में जाकर बालकों को भोजन कराया जा सकता है।

( शेष पृष्ठ २० पर )

# किसी के भी भूतकाल की एक एक घटना देखना सम्भव है

फाक्स बहिनें, जो किसी के भी अतीत को--भूतकाल को पढ़ लेती हैं एक विशेष तन्त्र के माध्यम से —

भूतकाल को पढ़ लेना कोई आश्चर्यजनक घटना नहीं रही है, विज्ञान के अनुसार हमारे जीवन में जो भी क्षण घटित होते है, वे सब समय-पटल पर पूर्ण रूप से अंकित हो जाते है। चाहे हम कितना ही छुपा कर काम करें परन्तु समय की नजरों से वह कार्य छुपा नहीं रह सकता। आवश्यकता इस बात की है, कि कोई ऐसी विधियां कोई ऐसी तरकीब खोजी जाय जिसके माध्यम से समय पटल को पहिचान सकें और उस पर अंकित घटनाओं को पढ़ सकें।

विदेशों में इस पर बहुत ज्यादा कार्य होने लगा है और पश्चिम के वैज्ञानिक आश्चर्यचकित रह गये है, कि एक विशेष प्रयोग के माध्यम से किसी के भी भूतकाल को आसानी से जाना जा सकता है, पहिचाना जा सकता है, और समझा जा सकता है।

आज व्यक्ति दोहरे चरित्र का हो गया है, वह गोपनीय ढंग से कुछ अलग प्रकार के कार्य करता है और समाज में सार्वजनिक रूप से उसका व्यवहार और चरित्र कुछ अलग प्रकार का होता है। आम व्यक्ति उसके दोहरे चरित्र को भांप नहीं सकता, कौन व्यक्ति रात के अंधेरे में क्या करता है, इसके बारे में कोई पूरी जानकारी नहीं मिल सकती, और इस प्रकार से व्यक्ति का चरित्र और उसके कार्य दबे-छुपे रह जाते है।

मैंने देखा है, कि जो नेता नारी स्वतंत्रता के हिमायती होते हैं, वे ही घर में अपनी पत्नी पर अत्याचार करते रहते है, बाहर से उजले वस्त्र पहिनने वाले व्यक्ति अन्दर से चरित्र हीन देखे गये है। बाहर गरीबों के मसीहा बनने का ढ़ोंग करने वाले स्वयं में पूर्ण रूप से अय्यासी होते है, इनके इस प्रकार के चरित्र को जानने का तरीका केवल इस साधना के द्वारा ही संभव है।

आप कल्पना करे, कि इस साधना को (विदेशों में साधना को "प्रयोग" शब्द से संबोधित किया जाता है) सम्पन्न करने पर नित्य नवीन तथ्य आपके सामने उजागर हो सकते हैं, जिस पत्नी को आप पवित्र कहते हुए नहीं थकते उसने शादी से पूर्व या शादी के बाद क्या क्या गुल खिलाये है, यह आप इस साधना से समझ है, आपकी पुत्री बिलम्ब से आने पर जो बहाने बनाती है वे बहाने कितने सही है, यह आप केवल इस साधना को सिद्ध कर के ही जान सकते है, आपका मित्र किस प्रकार के व्यक्तित्व का है, आप उसके साथ पार्टनर शिप में व्या-

पार कर रहे है, उसके मन में क्या बातें है, आपके पति किस चरित्र के है, आपका बेटा कहना क्यों नहीं मान रहा है, आदि ऐसी सैकड़ों उलझने और रहस्य है, जिन्हें हम और किसी भी तरीके से नहीं जान सकते, इन सबको जानने का केवल एक ही तरीका है, जो कि भूतकाल में झांक कर एक क्षण में ही कच्चा चिट्ठा खोल कर रख देती है।

आप स्वयं कल्पना करें, कि आप किसी अधिकारी से मिलने पर या किसी नेता के जीवन की गोपनीय घटनाएं लिख कर उनके सामने रख देने पर वह आपसे और आपके व्यक्तित्व से आपके ज्ञान और आपकी साधना से कितना अधिक प्रभावित हो जायेगा, यह आप अनुमान लगा सकते है, यही नहीं अपितु इसके बाद तो आपका किसी भी प्रकार का कोई भी कार्य सम्पन्न करने के लिए वह स्वयं ही तैयार रहेगा।

वास्तव में ही यह साधना अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण और दिव्य है।

## फाक्स बहिनें

इन दिनों पश्चिम में फाक्स बहिनों की धूम है, लोग उन्हें ऊंची रकम देकर अपने पास बुलाते है, और अपने विरोधियों के भूतकाल की घटनाओं को उनके द्वारा जान लेते है। अपने पति या पत्नी के चरित्र के बारे में फाक्स बहिनों के माध्यम से घटनाओं का आकलन कर लेते है।

फाक्स बहिने मूलतः लन्दन की रहने वाली है, परंतु स्वतन्त्रता से पूर्व उनके पिता भारत में अच्छे पद पर थे, और उन दोनों का जन्म भारत में ही हुआ था। बाद में यह परिवार लन्दन में जाकर बस गया।

फाक्स बहिनों को गूढ़ विद्याओं के बारे में बहुत अधिक रुचि थी, और इसी भावना की वजह से वे १९७४ में भारत आई और लगभग चार वर्षों तक जोशी मठ के एक आश्रम में रही, वहीं पर उनकी भेंट एक उच्चकोटि के योगी से हुई और ये बहिनें उस योगी से प्रभावित हो कर उनसे दीक्षा प्राप्त कर ली और उसके साथ ही रहने लगी।

वह योगी कई श्रेष्ठ विद्याओं और साधनाओं का जानकार था, उसने इन्हें श्रेष्ठ और उच्च कोटि की साधनाः—भूतकाल साधनाः—सम्पन्न करवा दी। और फाक्स बहिने कहती है, कि ज्यों ही साधना सम्पन्न की, उनके ललाट पर एक तीव्र प्रकाश सा अनुभव होने लगा कि जैसे दिमाग की खिड़कियां खुल गई हो और हजारों दृश्य स्मृति पटल पर उभरने लगे थे, फाक्स बहिने किसी भी व्यक्ति या स्त्री को देखती और मंत्र का एक या दो बार उच्चारण करती तो उसके भूतकाल की सारी घटनाएं कुछ ही सैकण्डों में वे उसी प्रकार से देख लेती, जिस प्रकार से हम टेलीविजन पर कोई दृश्य, घटना या कहानी देखते है।

इसके बाद फाक्स बहिने पुनः लन्दन चली गयी और आज वहां उनकी लोकप्रियता किसी भी अभिनेत्री या राजनीतिज्ञ से कम नहीं है। अमेरिका और लन्दन के उच्च कोटि के अखबारों ने उनकी जीवनी चित्रों के साथ छापी है, वैज्ञानिकों ने इन दोनों बहिनों पर कठोर परीक्षण कर स्वीकार किया है कि इनमें किसी प्रकार का कोई छल नहीं है, वास्तव में ही इन बहिनों के पास कोई अलौकिक शक्ति है जिसके माध्यम से ये बहिने किसी भी व्यक्ति को देखते ही या किसी का फोटो देखकर तुरन्त उसके भूतकाल का पूरा पूरा ब्यौरा दे देती है।

एक बार फाक्स बहिनें कहीं जा रही थी, और वे दोनों रेलगाड़ी में बैठी परस्पर बातों में मग्न थी, कि उनकी सामने की सीट पर बैठे हुए व्यक्ति पर नजर पड़ी, पहली ही दृष्टि में उन्हें ऐसा लगा कि यह हत्यारा है, और हत्या करने के बाद भाग रहा है।

अगले स्टेशन पर उन्होंने स्टेशन पर तैनात पुलिस

को इस बात की सूचना दी और वह हत्यारा पकड़ लिया गया, वास्तव में ही वह एक महीने पहले अपनी पत्नी की हत्या कर भाग गया था, और कहीं अता पता नहीं चल रहा था।

इसी प्रकार एक बार अमेरिका के कुबेर पति सेठ के लड़के का अपहरण हो गया था, पुलिस चारों तरफ उसे ढूंढ़ रही थी पर उसका कुछ भी पता नहीं चल रहा था।

उस सेठ ने फाक्स बहिनों को विशेष विमान से न्यू-यार्क बुलाया उन्होंने उस बालक के चित्र को देखा और उनकी आंखों के सामने पूरा का पूरा भूतकाल उजागर हो गया, उन्होंने बता दिया कि वर्तमान में बालक को कहां छिपा कर रखा गया।

पुलिस ने उस स्थान पर छापा मारा और बालक को प्राप्त कर लिया गया है।

इसी प्रकार एक बार फ्रांस में उच्च कोटि के वैज्ञा-निकों ने फाक्स बहिनों का परीक्षण किया, और उसे एक फोटो दे दिया गया, सामने लगभग दस बारह वैज्ञानिक जांच कर्ता बैठे हुए थे, फाक्स बहिनों ने उस फोटों को दो तीन मिनट ध्यान से देखा और फिर बताया कि यह व्यक्ति शराबी है, पेरिस के एम्पायर मौहल्ले में रहने वाला है. इसका नाम स्टीवर्ड है और इस समय यह व्यक्ति जेल में बीमार है, इसे टाइफाइड हो गया है।

वास्तव में ही ये सारे तथ्य सही थे और फाक्स बहिनों ने जो कुछ बताया था, वह अपने आप में पूर्णतः प्रामाणिक था, सभी वैज्ञानिकों ने एक स्वर से स्वीकार किया कि फाक्स बहिनों में किसी के भी भूतकाल को परखने की विशेष योग्यता है।

## कैसे प्राप्त होती है, यह योग्यता

विदेश में भी नहीं भारत में भी ऐसे कई लोग है, जो किसी को भी देखकर उसके भूतकाल का सही आकं-लन कर लेते है, और एक एक घटना को स्पष्ट रूप से बता देते है। इसके लिए "कर्ण पिशाचनी साधना" और अन्य कई ऐसी साधनाएं है जिनके माध्यम से भूतकाल को देखा जा सकता है।

परन्तु इन सबसे श्रेष्ठ और उत्तम कोटि की साधना है- "देवयानी साधना" वास्तव में ही यह अपने आप में आश्चर्यजनक और द्वितीय साधना है। इन्द्र की पत्नी देवयानी ने स्वयं इसे सिद्ध किया था और इसीलिए इस साधना को बाद में देवयानी साधना के नाम से ही जाना जाता है।

## देवयानी साधना

फाक्स बहिनों से सम्पर्क स्थापित करने पर पता चला कि उन्होंने भारत में रह कर उस योगी से देवयानी साधना ही सम्पन्न की थी, जिसकी वजह से उन्हें इन भूतकालीन घटनाओं का सहज ही पता चल जाता है। यह अपने आप में इतनी प्रामाणिक और दिव्य साधना है कि इस साधना के माध्यम से व्यक्ति को श्रेष्ठ योग्यता और अद्वितीय सिद्धि प्राप्त होती ही है।

२०-५-८९ को देवयानी जयन्ती है, यदि साधक इस दिन साधना को सम्पन्न करते है, तो उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त होने की संभावना बनती है।

## साधना रहस्य

यह मात्र तीन दिन की साधना है, शास्त्रों में कहा गया है, कि इस साधना को कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है, इसके लिए कोई तिथि या मुहूर्त की आवश्यकता नहीं है।

साधक यदि साधना करना चाहे, और यदि उसके लिए सुविधा हो तो उसे देवयानी जयन्ती के अवसर पर २०-२१-२२ मई को यह साधना सम्पन्न कर लेनी

चाहिए।

साधक को चाहिए कि वह स्नान कर सफेद वस्त्र धारण कर आसन पर बैठ जाय और अपने सामने किसी पात्र में "देवयानी यन्त्र" को स्थापित कर दें। यह यन्त्र अपने आप में महत्वपूर्ण होता है। इस यन्त्र के ऊपर तांत्रिक नारियल स्थापित करें और फिर इन दोनों की संक्षिप्त पूजा करें, पूजन करने के बाद सामने पांच हकीक पत्थर रख दें जो कि पूर्ण सिद्धि में सहायक है।

इसके बाद साधक एकाग्रचित्त हो कर स्फटिक माला से मंत्र जप प्रारम्भ करे, मंत्र जप से पूर्व और कोई अन्य जटिल विधि विधान नहीं है। यह साधना दिन को या रात्रि को कभी भी सम्पन्न की जा सकती है।

इस साधना में नित्य तीस माला मंत्र जप होना आवश्यक है। मंत्र जप में साधक उठे नहीं, तीस माला मंत्र जप होने के बाद ही अपने आसन से उठे।

## देवयानी मंत्र

### ॐ देवयानी ह्रौं भूतकाले प्रत्यक्षं दर्शय फट्

यह मंत्र अत्यन्त गोपनीय और तेजस्वी है, अतः आलोचक और मूर्ख व्यक्ति को यह मंत्र साधना नहीं दी जानी चाहिए

इसी प्रकार दूसरे और तीसरे दिन भी दीपक जला कर मंत्र जप करे, तीसरे दिन मंत्र जप पूरा होने पर उस नारियल को कूट पीस कर वहीं पर पाउडर बना कर अपने पूरे शरीर पर लगा ले और यंत्र को किसी धागे में पिरो कर गले में धारण कर ले। इसके बाद स्वच्छ जल से स्नान कर ले, और कपडे बदल कर पांचों हकीक पत्थरों को पांचों दिशाओं अर्थात् पूर्व, पश्चिम, उत्तर, और दक्षिण दिशा की ओर फेंक दे, पांचवा हकीक पत्थर आकाश की ओर फेंक दे, इस प्रकार यह साधना सम्पन्न होती है।

मंत्र जप पूरा करने के बाद ज्यों ही यंत्र धारण किया जाता है, त्यों ही उसके शरीर में एक नवीन प्रकार की चेतना और प्रकाश सा अनुभव होता है, ऐसा लगता है कि जैसे उसके दिमाग में हजारों बातें और सैंकड़ों घटनाएं परस्पर टकरा रही हो, इसके बाद परीक्षण के तौर पर साधक किसी पुरूष या स्त्री के चित्र को या उसको स्वयं को देखे और इसी मंत्र का एक या दो बार उच्चारण करे, तो उस पुरूष या स्त्री का भूतकाल पूरा का पूरा फिल्म की तरह आंखों के सामने चलने लगता है और उसके जीवन की छोटी से छोटी घटना भी स्पष्ट हो जाती है।

मेरे पिताजी ने जो कि वास्तव में ही उच्च कोटि के साधक और सन्यासी थे, उन्होंने मृत्यु से कुछ दिनों पूर्व ही इस साधना को मु. सम्पन्न करवाया था और इसके माध्यम से मैंने देश विदेश में जो प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त किया है, उसके मूल में यह देवयानी साधना ही है, जिसे कि मैंने पत्रिका पाठकों के लिए स्पष्ट किया है।

इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर है। मेरी राय में प्रत्येक पत्रिका पाठक और साधक को यह साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए क्योंकि इस साधना की विशेषता यह है कि इस साधना में पहली बार में ही सफलता मिल जाती है।

( शेष पृष्ठ १६ का )

इस प्रकार यह साधना सम्पन्न होती हैं।

साधना सम्पन्न होने के बाद साधक को विचित्र अनुभव होने लगते है, जब भी वह मूल मंत्र का जप करता हैं, तो श्री हनुमान के साक्षात दर्शन हो जाते है, या वह जो भी कामना करता है, वह पूर्ण हो जाती हैं।

संत तुलसीदास जी ने भी इसी साधना को सम्पन्न कर हनुमान के साक्षात दर्शन प्राप्त किये थे और उनके माध्यम से भगवान राम के प्रिय बन सके थे। यह साधना परम योगी रामशरणदासजी से मु. अत्यन्त गोपनीय तरीके से प्राप्त हुई थी जो कि वास्तव में ही दुर्लभ है और इस हनुमान जयन्ती के अवसर पर सभी साधकों के हितार्थ मैंने इसे पत्रिका में प्रकाशन हेतु दी है।

# अब महाभारत का युद्ध आप भी देख सकते हैं

तंत्र के माध्यम से जिस प्रकार से विश्व के वैज्ञानिक तेजी के साथ आगे बढ़ रहे हैं, और वे जो नये नये आयाम

## पूर्व जीवन

अब इसमें तो कोई संदेह नहीं रह गया, कि हमारे जीवन के संबंध पूर्व जन्मों से ही जुड़े होते है, यह अलग बात है, कि मृत्यु को प्राप्त हो कर हम दूसरा शरीर धारण कर लें, परन्तु इससे आत्मा नहीं बदल जाती, आत्मा के संबंध तो ज्यों के त्यों ही रहते है।

देह के संबंध तो स्थूल और महत्वहीन होते है, मूल संबंध तो आत्मा के ही होते है।

इसीलिए इस जन्म में भी हम किसी और को मन ही मन बहुत ज्यादा चाहने लगते है, केवल दो या तीन दिन के परिचय से ही ऐसा लगने लगता है, कि जैसे हम कई कई वर्षों से परिचित हों, उससे बातचीत करने में आनन्द की अनुभूति होती है इच्छा होती है कि उसके पास ज्यादा से ज्यादा समय बिताये, वह मुंह से आज्ञा दे, और हम अपने जीवन को उत्सर्ग कर दें।

पूर्व जन्म के पति पत्नी संबंध, भाई बहिन या प्रेमी प्रेमिका अथवा पिता पुत्र आदि के संबंध ज्यादा महत्वपूर्ण अनुभव होने लगते है। हम अपने पड़ोसी के साथ पिछले १५ वर्षों से रहते है, पर उनसे घनिष्ठता नहीं बन पाती। इसको बजाय सैकड़ों मील दूर बैठे हुए, व्यक्ति को, पुरुष या स्त्री को एक या दो दिन के लिए देखते है, या मिलते है, तो ऐसा लगने लगता है कि जैसे कई कई वर्षों से परिचत हो, और हम उसे भुला नहीं पाते, यह स्थिति पूर्व जन्म के संबंधों संस्कारों की वजह से ही बनती है।

और यह भी निश्चित है, कि पूर्व जन्म में जिससे जो संबंध होता है, वैसा संबंध स्थापित होने पर ही एक तृप्ति सी एक पूर्णता सी अनुभव होने लगती है।

---

खोज रहे है, वह वास्तव में ही एक क्रांतिकारी घटना है। जो बात भारतीय पिछले कई हजार वर्षों से कहते आ रहे है, वे बातें अब विज्ञान में ढ़ल कर विश्व के सामने आ रही है।

मैं आज की बात तो नहीं कह रहा हूं, परंतु पांच वर्षो बाद जब हमारा तंत्र और हमारी साधनाएं पश्चिम के द्वारा भारत में आयेगी और जब गोरी चमड़ी के लोग उन साधनाओं के माध्यम से सिद्धियां स्पष्ट कर के दिखायेंगे, तब हम चौंकेंगे, तब हम इधर उधर दौड़ लगायेंगे, और तब हम इसे सीखने का प्रयत्न करेंगे परन्तु तब तक बहुत देर हो चुकी होगी और वे लोग हम से बहुत आगे निकल चुके होंगे।

आज भी भारतवर्ष में ऐसे कैमरे मिलने लगे है, जिन्हें "अनसीड कैमरे" कहा जाता है। जर्मनी की एक फर्म ने इन कैमरों को तैयार किया है, और इन कैमरों से इनफा किरणें निकलती है, जो सूक्ष्मतम स्थितियों का भी फोटो उतार लेती है। इन कैमरों के माध्यम से यदि कमरे में अदृश्य व्यक्ति बैठे हुए है, तो उनके भी चित्र उतर जाते है।

भारतीय वैज्ञानिकों ने इन कैमरों और इनके शक्तिशाली लेन्सों के द्वारा जो चित्र खींचे है, वे उनके लिए आश्चर्यजनक है, उन्होंने यह अनुभव किया है कि जब हम कमरे में बैठे अपने मृत पिता या, किसी संबंधी रिश्तेदार की चर्चा कर रहे होते हैं, तब उस समय वे मृत आत्माएं भी

## अदृश्य सिद्धि दिवस

पिछले कई हजार वर्षों से वैशाख शुक्ल पक्ष नवमी को अदृश्य सिद्धि दिवस मनाया जाता रहा है। इस दिन गुरु अपने शिष्यों को सामने बिठाकर उसे यह अदृश्य सिद्धि साधना सम्पन्न करवाते थे, जिसकी वजह से उन शिष्यों को अपने पूर्व जीवन का भान हो सके, और पूर्व जीवन से इस जीवन में संबंध स्थापित कर सके।

अंग्रेजी पद्धति के अनुसार इस वर्ष १४ मई ८९ रविवार को यह अदृश्य सिद्धि साधना दिवस सम्पन्न हो रहा है, प्रत्येक भारतीय और प्रत्येक साधक को चाहिए कि वह इस दिन का अवश्य ही उपयोग करे, और इस दिन यह अदृश्य सिद्धि साधना सम्पन्न कर।

यह साधना मात्र एक रात्रि की है, यदि हम इस अवसर को चूक जाते है, तो वापिस एक साल बाद ही ऐसा महत्वपूर्ण दिवस प्राप्त हो पाता हैं। अतः अभी से योजना बना कर इस साधना को सम्पन्न करने का निश्चय कर लेना चाहिए।

---

कमरे में विद्यमान रहती है, और हमारी बातें ध्यान से सुनती है। उस समय और उन क्षणों के चित्र भारतीय वैज्ञानिकों ने लिये है, और इन कैमरों के माध्यम से जो चित्र धुल कर सामने आये है, उनको देखने से पता चलता है, कि कमरे में जो तीन चार लोग बैठे हुए थे, उनके चित्र तो उस फोटो में आये ही है, परन्तु साथ ही साथ उन मृत आत्माओं के चित्र भी फोटो में आ गये है, जिनकी हम चर्चा कर रहे थे, और वे चित्र बिल्कुल स्पष्ट और प्रामाणिक बन पड़े है।

वास्तव मे ही यह बात सही है, कि हम जब किसी के बारे में बात कर रहे होते है, तो उस मृत आत्मा की रूह भी कमरे में हमारे आस-पास ही मंडराती रहती है। यह अलग बात है, कि हमने अपनी साधनाओं के माध्यम से उन आत्माओं को देखने की कोशिश की, उन आत्माओं से बातचीत करने की कोशिश की और पश्चिम के वैज्ञानिक इस ज्ञान को मशीनों के माध्यम से स्पष्ट करने की कोशिश कर रहे है। दोनों का प्रयत्न और दोनों का लक्ष्य एक ही है, दोनों की विधियां अलग अलग है।

ये कैमरे जिनकी चर्चा मैंने ऊपर की, इस समय भारत में आयात किये जा सकते है, परन्तु फिलहाल ये कैमरे मंहगे है, इनकी कीमत डेढ़ लाख रुपये बैठती है परन्तु वैज्ञानिक निरन्तर प्रयत्न कर रहे है, कि ये कैमरे सस्ते बन सके और शायद तीन चार वर्षो में काफी कम कीमत पर ये कैमरे भारत में उपलब्ध हो सकेंगे, अस्तु।

## काल दर्शन

यह बात निश्चित है, कि जो घटना घटित हो जाती है, वे घटनाएं समाप्त नहीं होती, उन घटनाओं को मिटाया भी नही जा सकता, वे काल के स्मृति पटल पर सुरक्षित रहती है। इनमें 'इथर'' वेव काम करती है और यह इथर पूरे संसार में और ब्रह्माण्ड में फैला हुआ है। हम टेलीविजन पर अमेरिका इंग्लैण्ड या जापान के जो प्रोग्राम देखते हैं, उसका माध्यम ये इथर तरंगे ही है। इथर उन चित्रों को ज्यों का त्यों हजारों मील दूर ले आता है और हम अपने घर के कमरों में बैठे टेलीविजन के माध्यम से उन चित्रों को देख लेते है, अब तो ऐसे टेलीफोन भी बनने लग गये है, जिनके ऊपर चार इन्च चौड़ा और चार इन्च लम्बा टेलीविजन का पर्दा लगा होता है, और जब हम टेलीफोन से बात कर रहें होते है, तो जिनसे हम बात करते है, उनका चित्र भी उस पर्दे पर साफ-साफ देखते रहते है।

परन्तु जापान के वैज्ञानिकों ने एक बिल्कुल नवीन

टेक्नोलोजी ढूंढ निकाली है और उन्होंने जो कैमरा बनाया है, उस कैमरे का नाम "अनसीड" रखा है, इसका तात्पर्य रह है कि जो हम अपनी नंगी आंखों से नहीं देख सकते, उसको भी यह कैमरा देख लेता है और टेलीविजन के पर्दो पर उन दृश्यों को स्पष्ट करने में सहायक होता है।

जापान के वैज्ञानिक इजरा ने पूर्णत दावे के साथ यह स्पष्ट किया है, कि आज से दस हजार वर्ष पहले भी यदि पृथ्वी पर या ब्रह्माण्ड में कहीं पर, भी कोई घटना घटित हुई है, तो वे घटनाएं कम्प्यूटर के स्मृति पटल पर जिस प्रकार से मेमोरी में आंकडे सुरक्षित रखे जाते है और जब चाहे उन आंकड़ों को देख सकते हैं, उसी प्रकार जो घटनाएं घटित हो चुकी होती है, उन घटनाओं को भी वापिस इस अनसीड मशीन के द्वारा टेलीविजन के पर्दे पर देख सकते है क्योंकि वे घटनाएं भले ही, पांच दस हजार वर्ष पहले घटित हुई हो, परन्तु वे काल के स्मृति पटल पर सुरक्षित है, वे मिट नहीं सकती हम उन घटनाओं को आज इस अनशीड मशीन के माध्यम से ज्यों का त्यों देख सकते हैं।

और पश्चिम के वैज्ञानिकों के सामने इजरा ने अपनी मशीन से प्रदर्शन किया उसके द्वारा उन्होंने बुद्ध का निर्वाण, त्रेता युग में घटित राम-रावण युद्ध, द्वापर की ऐतिहासिक महाभारत की घटना और उसका युद्ध तथा १९४८ में महात्मा गांधी को गोली लगने की घटनाओं को ज्यों का त्यों टेलीविजन के पर्दे पर देखा, ऐसा लगा कि जैसे ये सारी घटनाएं हमारी आंखों के सामने घटित हो रही हैं।

निकट भविष्य में ही इस मशीन के माध्यम से हम देख सकेंगे कि हमारे दादा या परदादा किस प्रकार के व्यक्ति थे, उनके जीवन में क्या क्या घटनाएं घटित हुई थी। हम स्वयं पूर्व जीवन में कहा पैदा हुए थे, किस प्रकार से हम बड़े हुए थे और हमारे जीवन में क्या क्या घटनाएं हुई थी, इन सब को देखना अब संभव होने लगा है। इस मशीन के माध्यम से हम यह भी देख सकेंगे कि हमारे वर्तमान जीवन से पहले के जीवन में हमारे संबंधी कौन-कौन थे, हमारा विवाह किससे हुआ था, और किन लोगों से हमारे किस किस प्रकार के संबंध थे, ये सब अब इस मशीन से देखा जाना संभव हो सका है।

यह टेक्नोलोजी अभी अपनी प्रारम्भिक स्थिति में है, पांच सात वर्षों में यह टेक्नोलोजी अत्यन्त उन्नत हो सकेगी और इसके माध्यम से हम जीवन के बहुत कुछ रहस्य देख सकेंगे, पहिचान सकेंगे और उसके द्वारा निर्णय ले सकेंगे।

## परन्तु यह सब तो अभी भी देख सकते हैं

पश्चिम के इन वैज्ञानिकों का आधार तो भारतीय तंत्र ही है। यह सारा ज्ञान तो मूलतः हमारा ही है, उन्होंने इसे सुधार कर नये रूप में एक चतुर बनिये की तरह रखने का प्रयास किया है। मैं जो बार-बार यह कह रहा हूं, कि यह सब कुछ आज भी देखा जा सकता है। आज भी हम अपने स्थान पर बैठे बैठे संसार में कहीं पर भी होने वाली घटना को अपनी आंखों से देख सकते है। हम अपने पिछले जीवन को और संबंधों को देख सकते है। हम महाभारत के युद्ध को साफ साफ स्पष्ट रूप से देख सकते है, और इस प्रकार हम उन रहस्यों का भी पता लगा सकते है, जो हमारे लिए रहस्यमय है, जिन गुत्थियों को हम सुलझा नहीं सके है, उन गुत्थियों को भी इन साधनाओं के माध्यम से भली प्रकार से सुलझा सकते है शास्त्रों में इस साधना का नाम "अदृश्य सिद्धि" है। और क्या आपको मालूम है, कि **हमारे शास्त्रों ने "अदृश्य सिद्धि दिवस" भी निश्चित किया है,** वैशाख शुक्ल पक्ष **नवमी को कई हजार वर्षो से अदृश्य सिद्धि दिवस मनाया जाता रहा है,** इस वर्ष अंग्रेजी तारीख के अनुसार यह **अदृश्य सिद्धि दिवस १४ मई ८९ को आ रहा है।**

## अदृश्य सिद्धि दिवस

शास्त्रों का अध्ययन करने पर पता चलता है, कि प्रति वर्ष इस दिवस को "अदृश्य सिद्धि" दिवस के रूप में

मनाया जाता रहा हैं। गुरूकुल में जहां शिष्य अपने गुरू के साहचर्य में रह कर शिक्षा अध्ययन करते थे, तब गुरू आज के दिन साधकों और शिष्यों को अदृश्य साधना सम्पन्न करवाते थे, जिसकी वजह से उनमें भूतकाल या पूर्व जीवन को देखने का ज्ञान प्राप्त हो सके और अपने पिछले जीवन को देख कर इस जीवन को व्यवस्थित कर सकें, उनमें वह क्षमता आ सके, जिसके माध्यम से वे शिष्य आगे चल कर ब्रह्माण्ड में कहीं पर भी घटित होने वाली किसी भी घटना को अपनी साधना के माध्यम से देख सके और उसके अनुसार जीवन को व्यवस्थित कर सके।

**आश्चर्य की बात तो यह है, कि यह केवल एक दिन की साधना है,** यह अलग बात है कि हम जरूरत से ज्यादा बुद्धियुक्त बन गये है, गुरू के प्रति आस्थाएं कम-जोर होने लगी हैं, और इन साधनाओं के बारे में हम संशय-असंशय की स्थिति में झूलते रहते है। हकीकत में देखा जाय तो हम आधे मन से साधना प्रारम्भ करते है ऐसी स्थिति में सफलता संदिग्ध हो जाती है।

आवश्यकता इस बात की है, कि हम बहुत पहले से योजना वना लें और मन में निश्चित कर लें कि मुझे इस तारीख को यह साधना सम्पन्न करनी ही है, और इसके लिए आवश्यक उपकरण को या दूसरे शब्दों में साधना सामग्री को पहले से मंगा कर रख लें।

पश्चिम के वैज्ञानिक जहां इस प्रकार की साधना सामग्री अर्थात् मशीन आदि का मूल्य लाखों रुपयों में स्पष्ट करते है, आज जापान में जो अनसीड केमरा बनाया है उसका मूल्य बीस लाख रूपये के आस-पास बैठता है। जबकि कुछ सौ रुपये की सामग्री के माध्यम से हम इस साधना को सम्पन्न कर लेते हैं और ठीक वही लाभ प्राप्त कर लेते हैं जो वे लाखों रुपयें खर्च करने के बाद प्राप्त कर पाते है।

वास्तव में ही वे साधक सौभाग्यशाली होंगे, जो
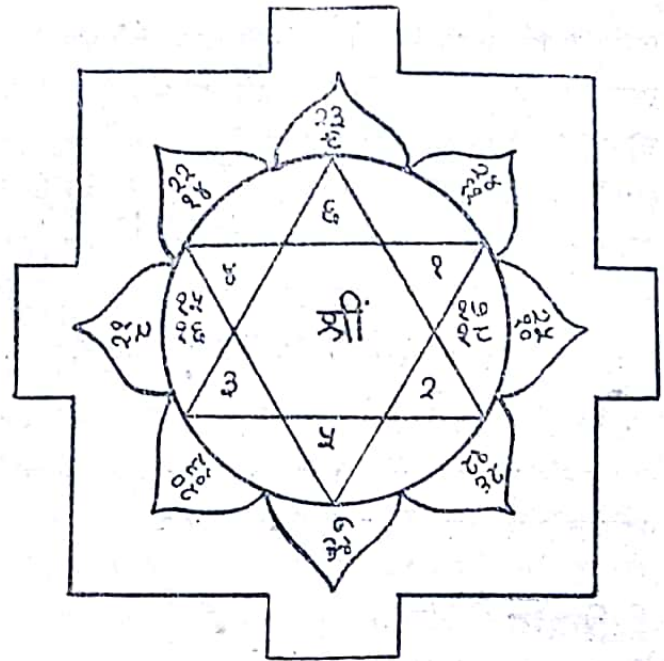
इस साधना की सामग्री मंगवा कर साधना प्रारम्भ कर लेंगे।

## अदृश्य सिद्धि साधना

यह रात्रिकालीन साधना है, १४ मई ८९ रविवार को संक्रांति दिवस है इसी रात्रि को यह साधना सम्पन्न की जाती है। साधक को चाहिए कि वह साधना प्रारम्भ करने से पूर्व कमरे में सफेद आसन बिछा दे और उस पर स्वयं सफेद धोती धारण कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय।

फिर अपने सामने कुकुंम या केसर के द्वारा एक पात्र में स्वस्तिक का चिन्ह बनावे और उस पर "अदृश्य सिद्धि गुटिका" रख दें। इसके सामने ही "अदृश्य सिद्धि यंत्र" और "अदृश्य धारणा यंत्र" को भी स्थापित कर दें। इस साधना में मात्र इन तीन उपकरणों की ही जरूरत पड़ती है, इसके बाद सामने पांच तेल के दीपक लगावे इसमें किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग हो सकता है।

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व साधक स्नान कर ले,

परन्तु स्नान करने के बाद किसी पात्र को बाल्टी या लोटे को छुए नहीं, पहले से ही धो कर सुखाई हुई सफेद धोती को जो पास में ही होनी चाहिए, उसे धारण कर ले और बिना किसी को स्पर्श किये साधना कक्ष में जा कर बैठ जाय, और जिस प्रकार से बताया है, उस प्रकार से स्वास्तिक का चिन्ह बना कर उस पर पर अदृश्य सिद्धि गुटिका और दोनों यन्त्रों को स्थापित कर दे तथा तेल का दीपक लगा दे।

इसमें एकाग्र चित्त से मन्त्र जप महत्वपूर्ण है, सबसे पहले हाथ में जल लेकर विनियोग करें -

दन्त मुद्रा

## विनियोग

ॐ अस्य श्री अदृश्य सिद्धि मन्त्रस्य श्रीमार्कण्डेय ऋषिः। अनुष्टुप-छन्दः। श्री अदृश्य सिद्धि देवता। ह्रां बीजं। ह्रीं शक्ति। ह्रू कीलकं। श्री अदृश्य देवी प्रीतये मंत्र जपे विनियोगः।

इसके बाद ऋष्यादि न्यास, कर न्यास एवं अंग न्यास करें।

## ऋष्यादि न्यास

श्री मार्कण्डेय ऋषये नमः शिरसि।
अनुष्टुप् छन्द से नमः मुखे।
श्री अदृश्य सिद्धि देवतायै नमः हृदि।
ह्रां वीजाय नमः लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः नाभौ।
ह्रू कीलकाय नमः पादयोः।
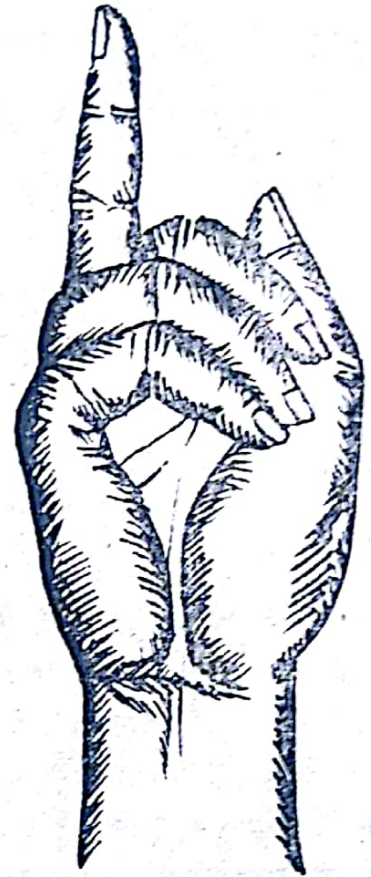
श्री अदृश्य सिद्धि देवता प्रीतये जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

## षडंग न्यास

| बीज | कर न्यास | अंग न्यास |
|---|---|---|
| ह्रां | अंगुष्ठाभ्यां नमः | हृदयाय नमः |
| ह्रीं | तर्जनीभ्यां स्वाहा | शिरसे स्वाहा |
| ह्रू | मध्यामाभ्यां वषट् | शिखायै वषट् |
| ह्रैं | अनामिकाभ्यां हुं | कवचाय हुं |

| | | |
|---|---|---|
| ह्लौं | कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् | नेत्र - त्रयाय वौषट् |
| ह्लः | करतल करपृष्ठाभ्यां फट् | अस्त्राय फट् |

इसके बाद निम्नलिखित अत्यन्त तेजस्वी दुर्लभ गोपनीय महामंत्र का मात्र १०८ बार उच्चारण करें।

## अदृश्य सिद्धि महामंत्र

ऐं ह्रीं क्लीं ह्लां ह्लौं ह्ल् जय अदृश्य सिद्धि देव्य त्रिदेश-मणि मुकुट कोटी संघट्टितचरणार-विन्दे, गायत्रि, सावित्री, सरस्वति, महाधि-कृताभरण, मधु-कैटभ-महिषासुर-धूम्रलोचन-चण्ड मुण्ड रक्त बोज शुम्भ दैत्य निष्कण्टके, काल-रात्रि, महा-माये, शिवे, नित्ये, इन्द्राग्नि यम निॠति-वरूण वायु सोमेशानप्रधान शक्ति भूते, ब्रह्म-विष्णु शिवस्तुते, त्रिभुवन-धराधारे, ज्येष्ठे, वरदे, रौद्रि, अंबिके, ब्राह्मि माहेश्वरि. कौमारि, वैष्णवि, शङ्खिनि, वाराहो, इन्द्राणि, चामुण्डे, शिवदूति, महाकाली-महालक्ष्मी महासरस्वती स्ववेषे, नाद, मध्य-स्थिते, महाग्रे विषारेण-फणाफणि घटित मुकुट कटकादि रत्न महा-ज्वाला मय पद बाहु कण्ठो तमांगे, मालांकुने, महा-महिषोपरि गन्धर्व विद्याधराराधिते, नव रत्न निधि कौशे, तत्व स्वरूपे, वाक् पाणि पाद पायूपस्थात्मिके, शब्द रूप स्पर्श रस गन्धादि स्वरूपं, त्वक् चक्षु श्रोत्र जिह्वा घ्राण महा बुद्धि स्थिते, ओंकार ऐंकार ह्लींकार क्लींकार हस्ते।

आं क्रौ आग्नेय नयन पात्रे प्रवेशय प्रवेशय, द्रां शौषय शौषय, द्रीं सुकुमारय सुकुमारय, श्रो सर्व प्रवेशय प्रवेशय, मम कार्याणि साधय साधय स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र इतना अधिक महत्वपूर्ण और प्रभाव-शाली है, कि इस रात्रि को ५१ बार उच्चारण करने के बाद ही आपको विविध दृश्य बिम्ब चित्र दिखाई देने लग जायेंगे और एकाग्रचित्त से दीपक की लौ पर ध्यान केन्द्रित करते हुए १०८ बार मन्त्र जप करने पर यह अदृश्य सिद्धि अवश्य ही प्राप्त होती है, और इसके माध्यम से व्यक्ति वर्तमान जीवन के और पूर्व जीवन के किसी भी प्रकार के दृश्यों को घटनाओं को अपनी आंखों से देख सकता है, समझ सकता है और उसका मन चाहा उपयोग, प्रयोग कर सकता है।

इसी रात्रि को जब १०८ बार मंत्र जप हो जांय तब उस गुटिका और दोनों यंत्रों को किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें और आगे चल कर जब कभी दृश्य धुंधले दिखाई देने लगे तो पुनः इस मंत्र का एक या दो बार उच्चारण कर ले तो पुनः वे घटनाएं और दृश्य साफ-साफ दिखाई देने लगेंगे।

वास्तव में ही यह अपने आप में अत्यन्त तेजस्वी, दुर्लभ, गोपनीय और महत्वपूर्ण साधना है, साधकों को चाहिए कि वे वर्ष की यह सर्वश्रेष्ठ साधना अवश्य ही सम्पन्न करें।

## जीवन में पूर्ण सफलता के लिए

# छः सर्वोत्तम सूत्र

प्रत्येक मनुष्य जीवन में सफलता पाना चाहता है; और इसके लिए वह विविध उपाय करता हैं, परन्तु मैंने

अपने पूरे जीवन में यह अनुभव किया है, कि जो काम हजारों रुपये खर्च करके भी नहीं हो पाता, वह बहुत

छोटे से उपाय से या सामान्य प्रयोग से सम्पन्न हो जाता है।

गुरू गोरखनाथ ने तो इस पर एक पूरी पुस्तक की रचना कर डाली है, और अपने ज्ञान बल से अपने आत्म बल से और अपने साधना बल से उन्होंने जो सूत्र स्पष्ट किये है, उनका प्रभाव देख कर कभी कभी तो आश्चर्य-चकित रह जाना पड़ता है।

एक बहुत बडा विशाल काय हाथी छोटे से अंकुश से वश में हो जाता है, एक लम्बा चौड़ा मनुष्य छोटी सी गोली से समाप्त हो जाता है और घनघोर अन्धकार में एक छोटा सा दीपक पूरा प्रकाश बिखेर देता है, इसी प्रकार जीवन की पूर्णता और सफलता के लिए छोटी सी मुद्रिका जिसे सामान्य भाषा में अंगूठी कहते हैं बहुत बड़ा परिवर्तन ले आती है गोरखनाथ ने तो स्पष्ट शब्दों में कहा है, कि ऐसी कोई समस्या नहीं है जो मंत्र सिद्ध मुद्रिका के माध्यम से हल न हो सके, इसके लिए उन्होंने विविध मुद्रिकाओं और उसमें अंकित यंत्रों के बारे में प्रामाणिकता के साथ जानकारी दी है।

## वैज्ञानिक आधार

अंगूठी हाथ की उंगली की जड़ में पहनी जाती है। विज्ञान ने कई वर्षो की खोज के बाद जो शोध प्रस्तुत किया है, वह अपने आप में महत्वपूर्ण है। मूलतः हाथ में चार उंगलियां और एक अंगूठा होता है, अंगूठे के पास वाली उंगली को तर्जनी, उसके पास जो सबसे बड़ी उंगली है, उसे मध्यमा, उसके पास वाली उंगली को अनामिका और सबसे छोटी उंगली को कनिष्ठिका कहते है, इसी प्रकार से बांये हाथ में भी अंगुलियां होती है।

अमेरिका के हरवर्ट विश्वविद्यालय में इस संबंध में जो शोध प्रस्तुत किया है, उसके निर्णय इस प्रकार है—
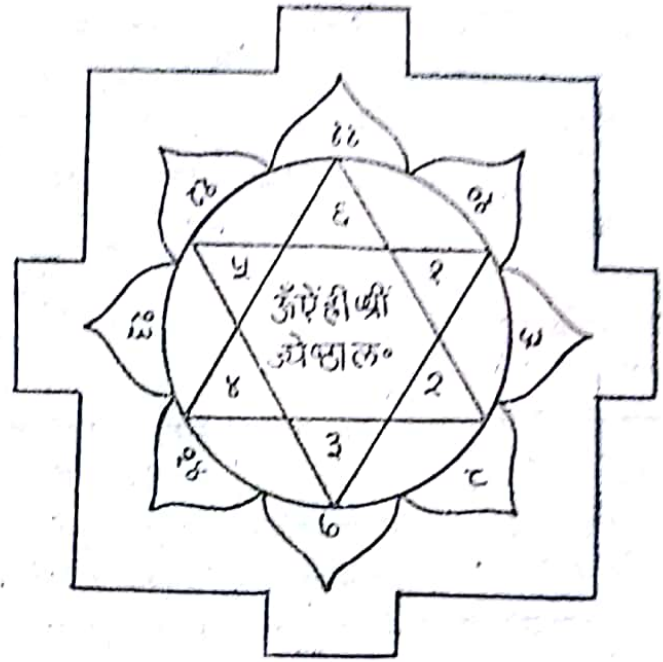
## १- तर्जनी

तर्जनी के मूल में कुछ ऐसी छोटी-छोटी नाड़ियां होती है, जिनका सीधा संबंध मस्तिष्क से होता है, इसके मूल में यदि अंगूठी या छल्ला डाला जाय तो उससे इन छोटी छोटी पर महत्वपूर्ण संवेदनशील नाड़ियों पर प्रभाव पड़ता है, और उससे दिमाग तेज होने के साथ साथ स्मरण शक्ति में वृद्धि होती है। राज्य उन्नति, लेखन, चातुर्य, परीक्षा में सफलता और उन्नति आदि की दृष्टि से इसकी जड़ में जो नाड़ियां होती है, वे जीवन में बहुत बड़ा रोल अदा करती है।

## २- मध्यमा

हाथ में जो सबसे बड़ी उंगली होती है, उसे मध्यमा कहते है, और इसके मूल में जो नाड़ियां होती है, वे लक्ष्मी प्राप्ति, आर्थिक उन्नति, व्यापार वृद्धि, भाग्योदय, शत्रु नाश, शत्रुओं पर विजय आदि की दृष्टि से संवेदनशील नाड़ियों का प्रवाह होता है, इन पर दबाव पड़ने से वातावरण में अनुकूलता आने के साथ-साथ ऐसी परिस्थितियां बनने लगती है, जिससे व्यक्ति शत्रुओं पर विजय

प्राप्त कर सकें, ज्योतिष की दृष्टि से यह शनि की उंगली मानी जाती है, दूसरे शब्दों में इस उंगली के मूल में स्थित रेखाओं से भाग्योदय आदि की जानकारी प्राप्त होती है। इसके मूल में अंगूठी पहिनने से निरन्तर भाग्योदय होता रहता है।

## ३- अनामिका

इस उंगली के मूल में प्रणय नाड़ियां होती है, जो कि प्रेम, स्नेह वैवाहिक जीवन, मधुरता, आकर्षण आदि की संवाहक होती है, इसीलिए विवाह के अवसर पति अपनी पत्नी को इसी उंगली में शादी की अंगूठी पहिनाता है। इस उंगली का मूल जहां प्रेम, सौन्दर्य, आकर्षण, गृहस्थ जीवन से संबंधित होता है, वहीं इसका मूल प्रसिद्धि, सम्मान, यश प्राप्ति आदि से भी संबंध रखता है।

## ४- कनिष्ठिका

यह सबसे छोटी उंगली भोग, विलास, ऐश्वर्य, आकर्षण, सम्मोहन पुरुषत्व आदि से संबंध रखती है। इसके मूल में छोटी-छोटी नाड़ियां होती है, वे शरीर स्थित इन सभी भावनाओं को केन्द्रित करती है, संचालन करती है, अवसर उपस्थित करती है और इस क्षेत्र में सफलता प्रदान करती है। वास्तव में ही यह उंगली सम्मोहन और सौन्दर्य का अद्वितीय संगम है।

जीवन में उन्नति के लिए इन उंगलियों के मूल को समझना ही चाहिए, दोनों हाथों में समान रूप से प्रभाव होता है, चाहे अंगूठी दाहिने हाथ में पहनी जांय या बांये हाथ में पहनी जांय, दोनों हाथों में पहनने से प्रभाव एक सा ही होता है।

## यंत्र प्रक्रिया

गुरू गोरखनाथ ने उंगलियों के मूल का तो विवेचन किया ही है, साथ ही साथ यंत्रों के बारे में भी जानकारी दी है, उन्होंने अपने अनुभव से यह स्पष्ट किया है कि यंत्र के माध्यम से असंभव कार्य भी संभव हो सकते है। उन्होंने यह भी बताया है कि यंत्र को लेकर पूजा स्थान में रखने की अपेक्षा यदि वह यंत्र अंगूठी पर अंकित कर उंगली में धारण किया जाय तो मनुष्य चौबीसों घण्टे उसका प्रभाव ग्रहण करता रहता है और वह यंत्र हर क्षण उसके जीवन को प्रभावित करता रहता है।

यन्त्र का महत्व तो प्राचीन ग्रन्थों ने भी पूर्णता के साथ स्वीकार किया है। श्री यंत्र तो पूरे संसार में विख्यात है और पश्चिम के वैज्ञानिकों ने एक स्वर से यह स्वीकार किया है, कि श्री यंत्र अपने आप में जटिल विधि विधान है, और इसमें आर्थिक उन्नति का प्रभाव उत्पन्न करने में विशेष महत्ता है। इसी प्रकार कुबेर यंत्र, कनकधारा यंत्र, शत्रु स्तम्भन यंत्र, आदि भी अपने आप में महत्वपूर्ण है और पिछले हजारों वर्षों से उच्च कोटि के राजा-महाराजा रानियां, राजकुमारियां, इन अंगूठियों को धारण करती रही है, और अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करती रही है।

इसके अलावा चौबीसा यन्त्र, छत्तीसा यन्त्र, आदि भी अत्यन्त महत्वपूर्ण माने गये है। श्रेष्ठ धातुओं पर इन यन्त्रों का अंकन एक विशेष मुहूर्त में सम्पन्न कर, इनको मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त की जाती हैं, तभी इन यंत्रों का प्रभाव अचूक होता है।

अनुभव में यह आया है कि इस प्रकार के यन्त्रों से अंकित मुद्रिकाओं को धारण करते ही, अनुकूल फल की प्राप्ति संभव होने लगती है, और यदि श्रद्धापूर्वक इन अंगूठियों को धारण किये रहे और अपवित्र न होने दे, तो कुछ ही दिनों में उसका पूर्ण अनुकूल फल प्राप्त हो जाता है। इस प्रयोग को मैंने अपने जीवन में हजार बार आजमाया है, और हर बार पूर्ण सफलता ही अनुभव हुई हैं।

## शत्रुओं पर हावी होने के लिए— छत्तीसा यन्त्र

**छत्तीसा छत्तीसा**
**क्या करे जगदीशा।**

नाथ सम्प्रदाय में यह कहावत प्रचलित है, कि जिसने अपनी उंगली में छत्तीसा यंत्र अंगूठी पर अंकित करवा कर धारण कर लिया है, उसका साक्षात जगदीश भी अर्थात् ईश्वर भी क्या बिगाड़ सकता है।

छत्तीसा यंत्र की यह विशेषता होती है, कि इसको किसी भी पक्ति से गिना जाय तो उसका कुल जोड़ छत्तीस ही आता है, इसीलिए इसका अत्यन्त महत्व माना गया है। इस अंगूठी को मध्यमा उंगली मे धारण किया जाना चाहिए, और यदि चौबीसों घण्टे यह अंगूठी धारण किये रहे, तो पहनने वाला व्यक्ति कुछ ही दिनों में शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त कर पाता है। इस अंगूठी के द्वारा वह शत्रुओं पर तो विजय प्राप्त करता ही है, शत्रु उसके सामने नत मस्तक रहते है, इसको पहन कर मुकदमें में या कोर्ट में जावे तो पूर्ण वातावरण उसके अनुकूल हो रहता है। यदि उसकी उंगली में पहनी हुई अंगूठी पर न्यायाधीश का दृष्टि पडे तो उसके विचार भी अनुकूल होने लगते है। वास्तव में हो जिनको राज्य भय हो, इन्कम टेक्स, सेल टेक्स या अन्य किसी प्रकार की बाधाएं अड़चनें, कठिनाइयां, शत्रु भय, आदि अनुभव होता हो, तो यह अंगूठी अपने आप में लाजवाब है।

अंगूठी पर सुन्दर ढंग से छत्तीसा यंत्र अंकित किया हुआ, अपने आप में सुन्दर तो दिखाई देती ही हैं, सामने वाले पर मनोवैज्ञान का प्रभाव भी डालने में समर्थ होती है। इस अंगूठी के पहनने से जीवन सभी दृष्टियों से निष्कंटक, निर्भय और तनाव रहित हो जाता है।

इसके अलावा यह अंगूठी या दूसरे शब्दों में छत्तीसा यंत्र मुद्रिका व्यापार वृद्धि और भाग्योदय में विशेष रूप से अनुकूल होती है। वास्तव में ही यह मुद्रिका सही शब्दों में कहा जाय तो जीवन का सौभाग्य मानी गई है।

## आश्चर्य जनक लक्ष्मी प्राप्त करने के लिए— चौबीसा यंत्र

**यन्त्र पहिर चौबीसा**
**धन, सुख, भोग अनीसा।**

अर्थात् जो अपनी उंगली में चौबीसा यंत्र की अंगूठी बनवा कर धारण कर लेता है, वह आश्चर्यजनक रूप से लक्ष्मी प्राप्त करने लगता है जिस प्रकार का भी भोग वह

अपने जीवन में चाहता है, वह भोग सुख, ऐश्वर्य उसे अनायास ही प्राप्त होने लगते है।

इस अंगूठी की यह विशेषता है कि इसके धारण करने से आर्थिक दृष्टि से निरन्तर उन्नति होती रहती है, चारों तरफ का वातावरण कुछ ऐसा बन जाता है, कि जसके आर्थिक स्रोत चारों तरफ से खुल जाते है, अच्छे व्यक्तियों से परिचय और सम्पर्क बनता है, और उसके माध्यम से ही जीवन में भोग एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होने लगती है।

गुरू गौरखनाथ के अनुसार चौबीसा और बीसा यन्त्र का एक सा ही प्रभाव है, और दोनों ही कलियुग में तो अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसे बांये हाथ की माध्यमा उंगली में पहनी जानी चाहिए।

इस अंगूठी का मैंने प्रभाव अनुभव किया है, यदि कहीं पर रुपया फंसा हुआ हो या निकल नहीं रहा हो तो इसके पहनने से कार्य सम्पन्न होने लगता है। इस अंगूठी की यह विशेषता है कि यदि व्यक्ति पर कर्जा हो तो यह शीघ्र ही ऋण मिटा देती है, व्यापार नहीं चल रहा हो तो इसके पहनने से व्यापार बढ़ने लगता है, नया व्यापार शुरू होने लगता है, रुके हुए व्यापार में तेजी आने लगती है, व्यापार में बिक्री बढ जाती है, और एक प्रकार से देखा जाय तो घर में धन की वर्षा सी होने लगती हैं, **वास्तव में ही यह अंगूठी कलियुग में कल्प-वृक्ष के समान फलदायक है।**

## भोग विलास, सम्मोहन, वशीकरण के लिए-- कामदेव यन्त्र

**यन्त्र काम पहरणा**

**पत्थर को वश करणा।**

नाथों और प्राचीन ग्रन्थों में तो यह कहावत है, कि कामदेव यन्त्र को पहिन लिया जाय तो वह व्यक्ति पत्थर को भी अपने वश में कर सकता है, फिर पुरुष या स्त्री की तो बिसात ही क्या है, इस यन्त्र में कुछ ऐसी विशेषता है, कि यह किसी को भी सम्मोहित करने में समर्थ है, सामने वाले को अपने आकर्षण में बांधने के लिए यह यन्त्र-मुद्रिका अपने आप में लाजवाब है, इस प्रकार की मुद्रिका को सबसे छोटी उंगली में धारण करना चाहिए।

यह अंगूठी जिस पर कामदेव यन्त्र अंकित हो, तो कुछ ही दिनों में पुरुष या स्त्री के शरीर में विशेष प्रकार का आकर्षण पैदा होने लगता है, उसका व्यक्तित्व चुम्बकीय हो जाता है, और यदि अपने अधिकारी से मिलते समय उसकी नजर अंगूठी पर पड़े तो निश्चय ही वह अधिकारी पहिनने वाले के अनुकूल होता ही है, और उसके कहे अनुसार कार्य करने लग जाता है।

इसी प्रकार यदि प्रेमी अपनी प्रेमिका से बातचीत करते समय उसका ध्यान आकृष्ट कर ले, तो वह पूर्णतः सम्मोहन में बंध जाती है, और उसके कहे अनुसार कार्य करने लगती है, इसी प्रकार प्रेमिका भी अपने प्रेमी को इस मुद्रिका के माध्यम से आकर्षण में बांध सकती है, पति अपनी पत्नी को या पत्नी अपने पति को इस प्रकार के कामदेव यन्त्र अंकित मुद्रिका के माध्यम से अपने अनुकूल बना सकती है।

दूसरे शब्दों में कहा जाय तो इस अंगूठी के माध्यम से किसी भी व्यक्ति, पुरुष या स्त्री को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है, अपने सम्मोहन में बांधे रख सकता है और जीवन भर उससे अपना मनोनुकूल कार्य सम्पन्न करवा सकता है, व्यापारी इसके माध्यम से महत्वपूर्ण ग्राहक बांधे रख सकता है, अपने पार्टनर को अनुकूल बनाये रख सकता है, जीवन के किसी भी क्षेत्र में यह अंगूठी अपने आप में महत्वपूर्ण है।

इस अंगूठी के माध्यम से सम्मोहन आकर्षण और वशीकरण क्रिया तो सम्पन्न होती ही है, पहिनने वाले के

जीवन में भोग विलास की भी वृद्धि होने लगती है। विशेष प्रकार से पुरुषत्व का प्रभाव अनुभव करने लगता है। वास्तव में ही स्त्रियों के लिए यह मुद्रिका सही अर्थों में जीवन का सौभाग्य कहीं जा सकती है।

## अनुकूल विवाह एवं प्रेम के लिए— गन्धर्व यन्त्र

मैंने अपने जीवन में जितनी बार भी इस अंगूठी के प्रभाव को परखना चाहा, मुझे पूर्ण सफलता ही अनुभव हुई, गन्धर्व मुद्रिका तो देवताओं तक ने धारण की है।

**गन्धर्व सारा संसारा**
**अब सब कोई हमारा**

गुरु गोरखनाथ की इन पंक्तियों का तात्पर्य यह है, कि गन्धर्व यंत्र की यह विशेषता है कि इसको धारण करने पर सारा संसार उसके अनुकूल हो जाता है, वह अपने जीवन में जिसको चाहता है, जिस प्रकार से चाहता है, वह कार्य होने लगता है।

यदि लड़की बड़ी हो गई हो और उसका विवाह नहीं हो रहा हो, अथवा लड़के का विवाह नहीं हो रहा हो, तो गन्धर्व यंत्र मुद्रिका अपने आप में महत्वपूर्ण उपाय है। पहनने वाला किसी निश्चित पुरूष या स्त्री से ही शादी करना चाहता है और सामने वाला स्वीकृति नहीं देता हो तो इसके धारण करने से सामने वाले व्यक्ति का आकर्षण स्वतः बढ़ जाता है और अनुकूल स्थिति पैदा हो जाती है यहीं नहीं, अपितु शीघ्र मन की इच्छा के अनुरूप विवाह कार्य सम्पन्न होने की दृष्टि से यह मुद्रिका या दूसरे शब्दों में कहा जाय तो गन्धर्व यंत्र अंकित मुद्रिका अपने आप में महत्वपूर्ण है।

विवाह के बाद पति पत्नी में प्रेम बना रहे, पति अनुकूल बना रहे, इस दृष्टि से भी यह यंत्र महत्वपूर्ण है। यदि प्रेमिका चाहे कि उसके प्रेमी का चित्त बदले नहीं तो यह यंत्र महत्वपूर्ण है, यदि कोई प्रेमी प्रेमिका को जीवन भर अपने अनुकूल बनाये रखना चाहे तो यह यन्त्र सर्वाधिक सहयोगी है।

वास्तव में ही यंत्र मुद्रिका जीवन का सौन्दर्य है इसे किसी भी हाथ की अनामिका उंगली में धारण करना चाहिए।

वास्तव में ही वे मनुष्य दुर्भाग्यशाली कहे जा सकते है, जिनके सामने ऐसे यन्त्र या सुविधा उपलब्ध हो, और वह अपने जीवन में लाभ न उठा सके या अपनी इच्छा के अनुरूप कार्य सम्पन्न न कर सके, तो दुर्भाग्य के अलावा और क्या कहा जा सकता है? यह अंगूठी वैवाहिक जीवन को पूर्ण रूप से मधुर बनाये रखने में विशेष रूप से सहायक है।

## पूर्ण उन्नति के लिए— सरस्वती यन्त्र

जो अपने जीवन में परीक्षा में सफल होना चाहते हैं; जो यह चाहते हैं, कि उनकी स्मरण शक्ति तेज हो, जो राज्य में प्रमोशन या उन्नति चाहते है, जो लेखन के माध्यम से प्रसिद्धि, यश और सम्मान चाहते है, जो किसी भी प्रकार के इन्टरव्यू में सफलता चाहते हैं, उनके लिए सरस्वती यंत्र अंकित मुद्रिका वास्तव में ही अपने आप में अद्वितीय है।

इसके धारण करने से स्मरण शक्ति तेज होने लगती है, उसकी याददास्त बनी रहती है, और निरन्तर उसे यश और सम्मान प्राप्त होता रहता है।

इस अंगूठी को तर्जनी के मूल में धारण करना चाहिए। बालकों और जीवन में पूर्ण सफलता चातुर्य, बुद्धिमानी और अद्वितीयता के लिए यह मुद्रिका जीवन का सौभाग्य कही जा सकती है।

## विशेष तथ्य

ऊपर मैंने कुछ विशिष्ट यंत्र और उन से संबंधित मुद्रिकाओं का वर्णन विवरण दिया है। तांत्रिक ग्रन्थों और शास्त्रों में इसके बारे में विस्तार से विवेचन है। प्राचीन समय में योगियों, यतियो, सन्यासियों ने तो अपनी समस्याओं के समाधान के लिए मुद्रिकाओं को धारण किया ही है, राजाओं, महाराजाओं सम्राटों, रानियों, महारानियों और सुन्दरियों ने भी अपने जीवन की पूर्णता के लिए इस प्रकार की मुद्रिकाओं को धारण किया है, और अपने जीवन में पूर्ण सफलता पाई है। ●

## संसार की सर्वाधिक तेजस्वी साधना

### इन्द्रकृत

# सिद्ध सहस्र लक्ष्मी महाविद्या प्रयोग

अभी अभी पिछले दिनों हिरण्मय वासी तपोनिष्ठ योगीराज शैलन्द्र स्वामी जी से एक अद्भुत और आश्चर्य-जनक प्रयोग प्राप्त हुआ है; यदि पाठकों ने शास्त्रों का अध्ययन किया हो, तो उन्हें पता चलेगा कि इन्द्रकृत सहस्र लक्ष्मी प्रयोग सर्वथा गोपनीय और दुर्लभ प्रयोग रहा है, यद्यपि इसकी चर्चा कई ग्रन्थों में आई है,

परन्तु इसका विस्तृत वर्णन हमें अभी तक प्राप्त नहीं हुआ था। पत्रिका की टीम इस रहस्य को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील थी, परन्तु इसकी प्रामाणिक विधि और इसका शुद्ध पाठ प्राप्त नही हो रहा था, पिछले दिनों कुम्भ के अवसर पर योगीराज शैलेन्द्र स्वामी जी से भेंट हुई और हमें ज्ञात था. कि यह विद्या उनके कंठ में सुरक्षित है, हमने उनसे निवेदन किया तो उन्होंने कृपा पूर्वक यह दुर्लभ साधना रहस्य हमें अंकित करवा दिया, इसके लिए पत्रिका, स्वामी जी की आभारी है।

## महाविद्या प्रयोग

दस महाविद्या के बारे में तो पत्रिका के पाठक पढ़ ही चुके है, और उनमें से कई साधकों ने उन प्रयोगों को अपनाया भी है, परन्तु देवताओं के अधिपति इन्द्र ने भगवती लक्ष्मी को भी महाविद्या मान कर उसकी साधना, की, और सहस्र रूपेण अर्थात् हजार हजार रूपों में भगवती लक्ष्मी इन्द्र के निवास में स्थापित हुई और इन्द्र देवताओं में सर्वाधिक सुखी, सर्वाधिक ऐश्वर्य सम्पन्न और सर्वाधिक पूर्णता प्राप्त व्यक्तित्व बने।

भगवती लक्ष्मी की साधना लक्ष्मी के रूप में तो कई स्थानों पर प्रचलित है, परन्तु महाविद्या का रूप देकर इस प्रकार की साधना इन्द्र ने ही स्पष्ट की है, और आगे के सभी ऋषियों ने एक स्वर से यह स्वीकार किया है, कि वास्तव में ही यह साधना अपने आप में शीघ्र फलदायक, निश्चित फलदायक और आश्चर्यजनक रूप से फलदायक है।

## सर्वाधिक तेजस्वी मंत्र

और मैं यह दावे के साथ यह सकता हूं, कि यह मंत्र अपने आप में अत्यन्त प्रभावयुक्त है, यद्यपि यह साधना अत्यन्त सरल प्रतीत होती है, परन्तु इसका प्रभाव अपने आप में अचूक है। आगे के ऋषियों ने भी इस साधना को सम्पन्न की. इतिहास साक्षी है, कि वशिष्ठ ने साधना को सम्पन्न कर अतुलनीय ऐश्वर्य प्राप्त किया। विश्वामित्र इस साधना को तंत्र मान कर सम्पन्न किया, और वे आश्चर्यचकित रह गये कि तंत्र की अपेक्षा यह जल्दी और पूर्णता के साथ सम्पन्न हो सका। इस साधना के द्वारा भगवती लक्ष्मी साक्षात जाज्वल्यमान स्वरूप में तो प्रगट होती ही है, अदृश्य रूप में भी वे साधक के घर में निवास करती है और उसे सभी दृष्टियों से पूर्णता प्रदान करती है। शंकराचार्य ने स्वयं इस साधना की बेहद प्रशंसा की है, और कहा है कि यह साधना कलियुग में गृहस्थ लोगों के लिए कल्प वृक्ष के समान वरदान स्वरूप है। गुरु गोरखनाथ ने तो अपने सभी शिष्यों को यह साधना सम्पन्न करने की आज्ञा दी थी, जिससे कि उनके शिष्य दरिद्री नहीं रहे, पूर्ण रूप से सम्पन्न व ऐश्वर्यवान बने, जिससे कि पूरे विश्व में अपने ज्ञान का सुविधापूर्वक प्रसार कर सके।

शंकराचार्य के बाद यह साधना एक प्रकार से लुप्त ही हो गई। ग्रन्थों में इस साधना का वर्णन विवरण तो मिलता रहा, परन्तु इस साधना की बारीकियां और इसका प्रभावी प्रामाणिक मंत्र प्राप्त नहीं हो सका। इसके प्रभाव और इसकी प्रामाणिकता के बारे में प्राचीन काल के ग्रन्थ भरे पडे है।

## साधना प्रयोग

यह प्रयोग पुष्य नक्षत्र को किया जाना चाहिए, अगले तीन महिनों में पुष्य नक्षत्र इस प्रकार से घटित होते है -

| दिनांक | पुष्य नक्षत्र–समय |
|---|---|
| ११-५-८९ | गुरू पुष्य-:-दिन भर एवं रात्रि को ११ बजे तक |
| ७-६-८९ | दिन भर और रात्रि भर |

उपरोक्त दोनों पुष्य नक्षत्र महत्वपूर्ण है, इसके अलावा १४ अप्रेल ८९ को भी पुष्य नक्षत्र सम्पन्न होता है, पर वह दिन के १ बजे तक ही है। मेरी राय में उपरोक्त दोनों मुहूर्तो का प्रयोग करना चाहिए।

इसके अलावा भी साधक कभी भी पुष्य नक्षत्र का प्रयोग कर सकता है, श्रेष्ठ साधक तो पूरे वर्ष भर प्रत्येक पुष्य नक्षत्र को यह प्रयोग सम्पन्न करते है।

## साधना सामग्री

इस साधना में पांच पदार्थों की आवश्यकता होती है, जो कि शास्त्र विधि के अनुसार निम्नलिखित है -

१– पूर्णता के लिए– तांत्रोक्त नारियल।
२– समृद्धि के लिए– कल्पवृक्ष फल
३– सिद्धि के लिए– बिल्ली की नाल
४– स्थापन के लिए– महालक्ष्मी चित्र और
५– ऐश्वर्य के लिए– कमल गट्टे की इन्द्र सहस्र लक्ष्मी माल्य

साधक इन पांचों वस्तुओं को कहीं से भी प्राप्त कर सकता है, पर इस बात का ध्यान रहे कि ये सारी वस्तुएं मन्त्र सिद्ध एवं प्रामाणिक हो।

पत्रिका की यह नीति रही है, कि वह उच्च कोटि के योगियों और पंडितों से ऐसी दुर्लभ सामग्री प्राप्त कर आप तक पहुँचाने का प्रयास करती है। हमने इन पांचों वस्तुओं का समन्वित नाम " इन्द्रकृत सिद्ध सहस्र लक्ष्मी महाविद्या पैकेट " रखा है जिसमें ये पांचों वस्तुएं प्रामाणिकता के साथ है और साधक इस पैकेट से ये वस्तुएं प्राप्त कर पूर्णता के साथ साधना सम्पन्न कर सके।

इसके अलावा जलपात्र, केसर, पुष्पों की माला, कुछ खुले पुष्प, नारियल, फल, नैवेद्य आदि पूजन सामग्री भी पहले से ही साधना कक्ष में या पूजा घर में रख देनी चाहिए।

## साधना प्रयोग

जिस दिन साधक को साधना करनी हैं, उस दिन साधक स्नान कर पीली धोती धारण करे, स्त्री साधिका हो तो बालों को धो ले और पीठ पर उन बालों को खुला रखे। यदि साधक चाहे तो पति पत्नी दोनों आसन पर बैठ कर इस साधना को सम्पन्न कर सकते है।

सबसे पहले साधक पहले से ही प्राप्त महालक्ष्मी चित्र को फ्रेम में मंढ़वा कर अपने सामने रख दे और उसे जल से धोकर उस पर केसर की बिन्दी लगावे, सामने नैवेद्य अर्पित करे और फिर लक्ष्मी के चित्र के सामने ही एक चावल की ढेरी बना कर तांबे का छोटा सा कलश जल से भर कर स्थापित करे और उस पर लाल कपड़ा रख कर उस कपडे को कलश से बांध दे फिर उस पर चावलों की ढेरी बनाकर तांत्रोक्त नारियल, कल्पवृक्ष फल, और बिल्ली की नाल स्थापित कर दें ; फिर इनकी संक्षिप्त पूजा करे और पुष्प अर्पित करे। साथ ही साथ इस कलश के सामने पांच घी के दीपक लगावे। जब तक साधना सम्पन्न करें तब तक घी के दीपक लगे रहने चाहिए। जो पुष्पों की माला लाई हुई है, वह साधक स्वयं धारण कर ले और शास्त्रों में विधान है कि पहले से ही पान लगा कर मंगवा लेना चाहिए और यह तांबूल अर्थात् पान मुंह में ले कर उसे चबाकर फिर उसे थूक दे, तथा मुंह को धोकर आसन पर बैठ कर मंत्र प्रयोग प्रारम्भ करे।

## मंत्र प्रयोग

सबसे पहले हाथ में जल ले कर संकल्प करे कि मैं आज पुष्य नक्षत्र के मुहूर्त पर अटूट धन सम्पत्ति, ऐश्वर्य प्राप्त करने के लिए यह दुर्लभ साधना सम्पन्न कर रहा हूं।

## विनियोग

ॐ अस्य श्री सर्व महाविद्या महारात्रि गोप-

नीय मन्त्र रहस्याति रहस्यमयी पराशक्ति श्री मदाद्या भगवति सिद्ध लक्ष्मी सहस्राक्षरी सहस्र रूपिणी महाविद्याया श्री इन्द्र ऋषि गायत्र्यादि नाना छन्दांसि, नवकोटि शक्तिरूपा श्री मदाद्या भगवति सिद्ध लक्ष्मी देवता श्री मदाद्य। भगवती सिद्ध लक्ष्मी प्रसादादखिलेष्टार्थे जपे पाठे विनियोगः ।

## ऋष्यादि - न्यास

श्री इन्द्र ऋषिभ्यां शिरसे नमः ।

गायत्र्यादि नाना–छन्दौभ्यौ नमः मुखे ।

नव कोटि शक्ति रूपा श्रीमदाद्या भगवती सिद्ध लक्ष्मी

प्रसादादखिलेष्टार्थे जपे पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

## अंग न्यास

ॐ श्रीं सहस्रारे ।
ॐ ह्रीं नमो माले ।
ॐ क्लीं नमो नेत्र युगले ।
ॐ ऐं नमः हस्त युगले ।
ॐ श्रीं नमः हृदये ।
ॐ क्लीं नमः कटौ ।
ॐ ह्रीं नमः जंगा द्वये ।
ॐ श्रीं नमः पादादि सर्वांगे ।

उपरोक्त लिखित उच्चारण कर फिर चित्र के सामने भगवती लक्ष्मी को श्रद्धा युक्त प्रणाम कर निम्न महाविद्या मन्त्र का २१ बार उच्चारण करें–

## सहस्राक्षरी सिद्ध लक्ष्मी महा विद्या मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौ श्रीं ऐं ह्रीं क्लीं सौः सौः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं जय जय महा लक्ष्मी, जगदाद्ये, विजये, सुरा सुर त्रिभुवन निदाने, दयांकुरे, सर्व देव तेजो रूपिणी विरंचि संस्थिते, विधि वरदे, सच्चिदानन्दे, विष्णु देहावृते, महा मोहिनी, नित्य वरदान तत्परे, महा सुधाब्धि वासिनि, महा तेजो धारिणि, सर्वाधारे, सर्व कारण कारिणे, अचिन्त्य रूपे, इन्द्रादि सकल निर्जर सेविते, साम गान गायन परिपूर्णोदय कारिणी, विजये, जयन्ति, अपराजिते, सर्व सुन्दरि, रक्तांशुके, सूर्य कोटि संकांशे, चन्द्र कोटि सुशीतले, अग्निकोटि दहन शीले यम कोटि वहन शीले ओमकार नाद बिन्दु रूपिणि, निगमागम भागदायिनि, त्रिदश राज्य दायिनी, सर्व स्त्री रत्न स्वरूपिणि, दिव्य देहिनि, निर्गुणो सगुणे, सदसद् रूपधारिणी, सुर वरदे, भक्त त्राण तत्परे, बहु वरदे, सहस्राक्षरे, अयुताक्षरे, सप्त कोटि लक्ष्मी रूपिणि, अनेक लक्षलक्ष स्वरूपे अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायिके, चतुर्विशंति मुनि जन संस्थिते, चतुर्दश भुवन भाव विकारिणे, गगन वाहिनि, नाना मन्त्र-राज विराजिते, सकल सुन्दरी गण सेविते, चरणारविन्दे, महा त्रिपुर सुन्दरि, कामेश दयिते, करूणा रस कल्लोलिनि, कल्प वृक्षादि स्थिते, चिन्ता मणि द्वय मध्यावस्थिते, मणि मन्दिरे निवासिनी, विष्णु वक्षस्थल कारिणे, अजिते, अमिले, अनुपम चरिते, मुक्ति क्षेत्राधिष्ठायिनी, प्रसीद प्रसीद, सर्व मनोरथान पूरय पूरय, सर्वारिष्टान छेदय छेदय, सर्व ग्रह पीड़ा ज्वराग्र भयं विध्वंसय विध्वंसय, सर्व त्रिभुवन जातं वशय वशय, मोक्ष मार्गाणि दर्शय दशय, ज्ञान मार्ग प्रकाशय प्रकाशय, अज्ञान तमो नाशय नाशय, धन धान्यादि वृद्धि कुरू कुरू, सर्व कल्याणानि कल्पय कल्पय, मां रक्ष रक्ष, सर्वापद्भ्यो निस्तारय निस्तारय, वज्र शरीरं साधय साधय ह्रीं क्लीं सहस्राक्षरी सिद्ध लक्ष्मी महा विद्यायै नमः ।

पाठक स्वयं इस मन्त्र कों पढ़ें और देखें कि यह मन्त्र कितना अधिक तेजस्वी और महत्वपूर्ण है, इस दिन केवल २१ बार इस मन्त्र का उच्चारण करना है, मन्त्र जप पूरा होने पर साधक तांत्रोक्त नारियल, कल्प वृक्ष, फल और बिल्ली की नाल को सुरक्षित रख दें, यदि साधक की कोई दुकान या फैक्टरी हो तो वहां पर भी जल छिड़क दें, कलश के ऊपर जो चावल रखे हुए थे, वे घर में रखे हुए धान्य में मिला दें, माला को पहने रहें या पूजा स्थान में रख दें ।

### जिस साधना से जीवन में सब कुछ प्राप्त हो जाता है
### गोपनीय दुर्लभ अद्वितीय

# चौसठ शक्ति साधना

यह लेख ही नहीं है, अपितु पूरे गृहस्थ जीवन का सौभाग्य है, ये केवल पंक्तियां ही नहीं है, परन्तु इसके

माध्यम से मैं आज कुछ ऐसा रहस्य उद्घाटन करने जा रहा हूं जो अपने आप में दुर्लभ और महत्वपूर्ण है।

मेरे पिताजी सही अर्थों में तांत्रिक थे, और भारत के महत्वपूर्ण राज्य देवनगर के कुल पुरोहित थे। राजपूताने का इतिहास साक्षी है, कि देवनगर की तीन पीढ़ियों को तंत्र और राजनीति में योग्य एवं सिद्ध करने का उत्तर-दायित्व मेरे पिताजी पर था, उन्हें तंत्र की गोपनीय सिद्धियों का आश्चर्यजनक ज्ञान था।

देवनगर के महाराजा हरीसिंह जी ने मेरे पिताजी को, जब वे चौदह साल के थे, तो उन्हें बंगाल में मेदिनी-पुर जिले में रहने वाले विख्यात तांत्रिक स्वामी हरिहरा-नन्दजी के पास भेजा था, उस समय स्वामी हरिहरानन्द जी पूरे भारतवर्ष में विख्यात थे। अंग्रेजों ने भी उन्हें सम्मान देते हुए, "सर" की उपाधि प्रदान की थी। जब हरिहरानन्द जी बनारस आये थे तो उन्होंने तत्कालीन अंग्रेज कलेक्टर मिस्टर रूच के सामने जल पर सहज गति से चलने और आकाश में स शरीर उड़ कर दिखाने की क्रिया प्रत्यक्ष करके दिखाई थी, उस समय के बना-रस के गजट में स्वयं कलेक्टर ने लिखा था, कि स्वामी हरिहरानन्द एक अचरज भरा व्यक्ति है, जो कार्य हो नहीं सकते, वो कार्य हरिहरानन्द ने कर के दिखा दिये।

स्वामी हरिहरानन्द स्वर्ण विज्ञान के भी सिद्धहस्त आचार्य थे, उन्होंने बनारस में ही श्री मदनमोहन माल-वीय के सामने पारद से स्वर्ण बनाकर यह बता दिया था कि स्वर्ण विज्ञान आज भी जीवित है. और उस समय सैकड़ों लोगों के सामने पारे से जो स्वर्ण बनाया था वह बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए दान स्वरूप दे दिया था। मदनमोहन मालवीय ने भी कहा था कि बंगाल के स्वामी हरिहरानन्दजी पूरे भारतवर्ष के सौभाग्य है, तंत्र के क्षेत्र में वे एक मात्र सिद्ध आचार्य है।

ऐसे तेजस्वी तांत्रिक स्वामी हरिहरानन्दजी के पास मेरे पिता सीखने के लिये महाराजा हरीसिंह जी की आज्ञा से गये थे, और वहां उन्होंने पूरे २६ वर्ष लगाकर अलौकिक शक्तियां और साधनाएं सीखी थी। **उन्होने पूरा ज्ञान मेरे पिताजी को दे दिया था। मेरे पिताजी की मृत्यु १०६** वर्ष की अवस्था में हुई और उस समय भी वे कद काठी से पूर्ण स्वस्थ एवं बलवान थे।

एक दिन बातचीत के प्रसंग में पिताजी ने कहा था, संसार की सर्वाधिक तेजस्वी और अद्भुत साधना:- **चौसठ शक्ति साधना-है**, यह एक ऐसी साधना है, जो गृहस्थ जीवन के लिये वरदान स्वरूप है जो गृहस्थ जीवन का पूर्ण आनन्द लेना चाहते है उनके लिए यह साधना कल्पवृक्ष के समान फलदायक और कामधेनु के समान अमृतदायक है।

यह साधना केवल तीन दिन की साधना है, किसी भी संक्रांति के अवसर पर अर्थात् जब सूर्य एक राशि से दूसरे राशि पर परिवर्तन हो रहा हो तब इस साधना को प्रारम्भ करना चाहिए, और मात्र तीन दिनों में ही यह साधना सम्पन्न हो जाती है।

आने वाले समय में संक्रांति पर्व निम्न तारीखों को हैं, इनमें से किसी भी तारीख से यह साधना सिद्ध की जानी चाहिए। इस साधना से पूरी चौसठ शक्तियां एक साथ सिद्ध हो जाती है, और शून्य में से किसी भी प्रकार की वस्तु प्राप्त कर सकता है, एक पदार्थ को दूसरे पदार्थ में बदल सकता है, और जब वह रात्रि को सोता है, तो शक्तियां स्वयं उसके सिरहाने स्वर्ण रूपये और धन लाकर देती रहती है। यही नहीं अपितु ऐसा साधक शक्तियों को जो भी आज्ञा देता हैं, ये शक्तियां तुरन्त साधक की आज्ञा का पालन करती है।

## संक्रांति पर्व

१- १४ अप्रेल ८९

२- १५ मई ८९

३- १५ जून ८९

आप इनमें से किसी भी तारीख से साधना प्रारम्भ कर सकते है, और तीन रात्रि साधना सम्पन्न कर इससे संबंधित पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते है। इस साधना से किसी भी प्रकार का भय व्याप्त नहीं होता, ये शक्तियां तो साधक के लिए पूर्ण रूप से सहायक होती है।

## साधना सामग्री

इस साधना के लिए कोई विशेष प्रपंच या सामग्री की जरूरत नहीं है, केवल थाली में तांत्रिक नारियल और "चौसठ शक्ति यंत्र" स्थापित कर उनकी पूजा कर शक्ति माला से मंत्र जप प्रारम्भ कर देना चाहिए, उपरोक्त दो पदार्थ अर्थात् तांत्रिक नारियल, चौसठ शक्ति यत्र एवं इसके साथ ही साथ "सिद्ध शक्ति माला" की आवश्यकता होती है और यह सामग्री इस साधना में तो काम आती ही है आगे के जीवन भर के लिए यह सामग्री उपयोगी रहती है।

## साधना प्रयोग

संक्रांति के दिन साधक स्नान कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर लाल आसन पर बैठ जाय और स्वयं लाल धोती धारण कर ले। सामने किसी पात्र में चौसठ शक्ति यंत्र और "तांत्रिक नारियल" स्थापित कर दे और सामने तेल के नौ दीपक लगा दे, फिर चौसठ शक्तियों के नाम ले कर उस यंत्र पर अक्षत चढ़ावे, पुष्प समर्पित करें।

## चौसठ शक्तियों के नाम

१- पिगंलाक्षी, २- विडालाक्षी, ३- समृद्धि, ४- वृद्धि, ५- श्रद्धा, ६- स्वाहा, ७- स्वधा, ८- मातृका, ९- वसुन्धरा, १०- त्रिलोक-रात्रि, ११- सावित्री, १२- गायत्री, १३ त्रिदशेश्वरी, १४- सुरूपा १५- बहुरूपा, १६- स्कन्द-माता, १७- अच्युत-प्रिया १८- विमला, १९- अमला, २० अरुणी, २१ आरुणी, २२- प्रकृति, २३- विकृति, २४- सृष्टि, २५- स्थिति, २६- संहृति, २७- सन्ध्या, २८- माता २९- सती, ३०- हसी ३१- मर्दिकी, ३२- रंजिका, ३३- परा, ३४- देव माता, ३५- भगवता, ३६- देवकी, ३७- कमलासना, ३८- त्रिमुखा, ३९- सप्त-मुखी, ४०- सुरा, ४१- असुर-विमर्दिना, ४२- लम्वोष्ठी, ४३- ऊर्ध्व-केशी, ४४- बहु शिखा, ४५- वृकोदरी, ४६- रथ-रेखा, ४७- शशि-रेखा, ४८- अपरा, ४९- गगन-वेगा, ५०- पवन वेगा, ५१- भुवन-माला, ५२- मदनातुरा, ५३- अनंगा, ५४- अनंग-मदना, ५५- अनंग-मेखला, ५६- अनंग-कुसुमा, ५७- विश्व-रूपा, ५८- असुर ५९- अक्षोभ्या, ६०- सत्य-वादिनी, ६१- वज्र-रूपा ६२- शुचि-वृता, ६३- वरदा, ६४- वागीशा।

इन चौसठ शक्तियों के नाम से अक्षत, पुष्प चढ़ा कर फिर साधक एकाग्र मन से दीपक की लौ पर नजर रखते हुए निम्न मंत्र की ५१ माला मंत्र जाप नित्य करे, यह मंत्र जाप केवल सिद्ध शक्ति माला से ही सम्पन्न होना चाहिए और मंत्र जप होने के बाद दिन भर साधक उस माला को अपने गले में धारण किये रहे। तीसरे दिन जब मंत्र जप पूरा होगा तो प्रधान शक्ति साधक के सामने निश्चय ही उपस्थित होती है और पूर्ण आशीर्वाद प्रदान करती हुई जीवन भर उसके लिए अनुकूल बनी रहती है।

## मंत्र

**ह्रीं क्रीं पूर्ण शक्ति स्वरूपायै क्रीं ह्रीं**

वास्तव में ही यह अपने आप में दुर्लभ और महत्वपूर्ण साधना है, जो मेरे पिताजी ने मुझे सिखाते हुए कहा था कि यह एक साधना ही जीवन की पूर्णता है और आज आर्थिक क्षेत्र में, समृद्धि के क्षेत्र में तथा सम्मान के क्षेत्र में मेरा जो नाम है, उसके मूल में यही सिद्ध शक्ति साधना है।

दिल्ली में

# १००८ कुण्डीय महायज्ञ

लाल किले के सामने

पूज्य गुरुदेव के जन्म दिवस के अवसर पर
दिनाङ्क १९-४-८९ से २५-४-८९ तक

"भगवती जगदम्बा गायत्री महायज्ञ" के रूप में सम्पन्न यह १००८ कुण्डीय महायज्ञ विश्व कल्याणार्थ एक अद्वितीय आयोजन, शिविर, एवं महायज्ञ के रूप में पूरे भारत वर्ष के सभी साधकों एवं शिष्यों का आवाहन करता है।

इस महायज्ञ के साथ साथ एक बृहद् शिविर आयोजन, ब्रह्मचेतना दीक्षा एवं अपने सूक्ष्म प्राणों को पहिचान कर सम्पूर्ण विश्व में व्यापकता देने का एक अनिर्वचनीय शिविर।

आप सभी साधकों, पत्रिका-पाठकों एवं शिष्यों को हम इस अवसर पर सहर्ष आमंत्रित कर रहे हैं।

**विस्तार से जानकारी के लिये सम्पर्क करें**

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

| कार्यालय | सिद्धाश्रम साधक परिवार कार्यालय | -राधेश्याम लाला |
| --- | --- | --- |
| हाईकोर्ट कोलोनी | ए-९ न्यू रणजीत नगर | जेड-१९ वेस्ट पटेल नगर |
| जोधपुर ३४२००१ (राज.) | (नजदीक सत्यम सिनेमा) | नई दिल्ली ११०००८ |
| टेलीफोन - २२२०९ | नई दिल्ली ११०००८ | टेलीफोन - ५७१५१६५ |

रजि० नं० ३५३०५/८१ पोस्टल एल० आर० जे० ३६६७/८६-८७

## सिद्धाश्रम साधक परिवार-गुजरात (अहमदाबाद) द्वारा

१००८ कुण्डीय

### विश्वशांति व मानव कल्याण के लिए

# श्री भगवती गायत्री-महालक्ष्मी महायज्ञ

मई १९८९

### साबरमती के आंचल में

- पहली बार गुजरात में पूर्ण सिद्धाश्रम मन्त्रों के द्वारा १००८ कुण्डीय महायज्ञ ।
- पहली बार यज्ञ के माध्यम से भगवती लक्ष्मी एवं मां गायत्री का यज्ञ कुण्ड में अग्नि की लपटों में प्रगटीकरण ।
- पहली बार प्रत्येक कुण्ड में प्रत्येक ऋषियों का आवाहन ।

ऐसा सौभाग्य पूरे विश्व में पहली बार भारतवर्ष के सभी साधकों एवं गुजरात के साधकों को विशेष रूप से हो रहा है, जब वे सिद्धाश्रम के संस्थापक परमहंस योगीराज स्वामी सच्चिदानन्द जी के परोक्ष दर्शन कर सकेंगे ।

### यज्ञ आयोजन समिति

सम्पर्क सूत्र

१. जीतेन्द्र आर. पटेल
६७१/४४२० न्यू बापू नगर,
अहमदाबाद—२४

२. बाबू भाई आर. पटेल
द्वारा योगेश व्यास
पुरोहित प्रिंटिंग प्रेस, घी कांटा रोड,
अहमदाबाद—३८०००१ फोन नं. ३६८१०८
कार्यालय-३३९४७२, घर-४६०१४८

श्री जीतेन्द्र आर. पटेल
डॉ. बाबूभाई पटेल
श्री शत्रुघ्न सिंह
श्री योगेश भाई
श्री अमरीश पुरोहित
श्री कनुभाई सोनी
श्री प्रवीण जोशी
श्री रणछोड़ पारेख

**मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान**
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर, (राज.) ३४२००१
फोन नं. २२००९